चतुर्थ-अध्याय

राजी सेठ के कथा साहित्य में प्रतिबिंबित समस्याएँ

चतुर्थ-अध्याय

राजी सेठ के कथा साहित्य में प्रतिबिंबित समस्याएँ

- आधुनिक युग की प्रमुख समस्याएँ
- राजी सेठ के कथा साहित्य में प्रतिबिंबित-
- दांपत्य जीवन की समस्या
- आर्थिक समस्या
- नारी समस्या
- अलगाव की समस्या
- अंतर्द्वंद्व की समस्या
- संत्रास की समस्या
- अकेलेपन की समस्या
- तनाव की समस्या
- निम्नवर्ग के शोषण की समस्या
- देशविभाजन की समस्या
- वृद्धों की समस्याएँ

चतुर्थ अध्याय

राजी सेठ के कथा साहित्य में प्रतिबिंबित समस्याएँ

उपन्यास और कहानी कथा साहित्य के प्रकार है | अतः उनमें कथा तो अपरिहार्य रूप से रहती ही है; परंतु केवल कथा कहना उपन्यास या कहानीकार का उद्देश्य कतई नहीं होता | कथा के माध्यम से वे मानव-जीवन की किसी-न-किसी समस्या को उद्‌घाटित करते है | हर युग में समस्याओं का अस्तित्व रहा है | कुछ समस्याएँ एक युग से दूसरे में हस्तांतरित होती है; पर उनकी व्यापकता, प्रभाव तथा तीव्रता में अंतर रहता है | मध्ययुग में बालविवाह प्रथा,सतीप्रथा,समाज को उत्पीडित करने वाली समस्याएँ थी, पर आज ये समस्याएँ समाप्त होने की स्थिति में हैं | उनकी तीव्रता तथा विस्तार में अंतर आया है | आधुनिक युग में बदलते परिवेश तथा बदलते मूल्यों के कारण नव-नवीन समस्याएँ पनप रही हैं | आज समाज में सामाजिक एवं पारिवारिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, धार्मिक समस्याएँ बड़ी मात्रा में व्याप्त है |

राजी सेठ ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से मानव जीवन की विविध समस्याओं का अंकन किया है | प्रस्तुत अध्याय में पहले आधुनिक युग की प्रमुख समस्याओं पर प्रकाश डाला है |

आधुनिक युग की प्रमुख समस्याएँ :-

सामाजिक समस्याएँ :-

मानव समाज एक ऐसा समाज है, जिसका निर्माण विभिन्न इकाइयों तथा संस्थाओं के अंर्तसंबंधों द्वारा होता है | जब

तक संरचना की सभी इकाइयाँ अपेक्षा के अनुसार कार्य करती हैं तब तक संरचना में संतुलन बना रहता है,परंतु जब संरचना का कोई भाग अपेक्षा के विपरित कार्य करता है तो असंतुलन की दशा उत्पन्न होती है | यहीं से सामाजिक समस्या की उत्पत्ति होती है |

सामाजिक समस्याएँ तभी उत्पन्न होती हैं जब विकास होता है परंतु उसका लाभ समान रूप से समाज के सभी वर्गो तथा समुदाय को नहीं मिलता | सामाजिक समस्याएँ समाज के अधिकांश सदस्यों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाली होती है, इन्हें हम व्यक्तिगत समस्याओं से अलग कर सकते हैं | व्यक्तिगत समस्या का प्रभाव कुछ लोगों पर ही होता है जब कि सामाजिक समस्या से समाज का बड़ा वर्ग प्रभावित होता है | फुल्लर और मायसे के मतानुसार- “सामाजिक समस्या व्यवहार के वे प्रतिमान है जिन्हें किसी समय में समाज के अधिकांश सदस्य अनपेक्षित मानते हैं |”[१]

समाज में परिस्थितिवश अनेक परिवर्तन आते रहते हैं | जब ये सामाजिक परिवर्तन सामाजिक मूल्यों को तोड़ने लगते हैं, उसी समय सामाजिक समस्या का जन्म होता है | परिवर्तित परिस्थितियों में सामाजिक मान्यताओं एवं मूल्यों तथा जातीय बंधनों का विघटन तेजी से हुआ | सामाजिक परिवर्तन में औघोकीकरण ने बहुत योगदान दिया | उघोगों के फैलाव से नगरों में भौतिक सुविधाओं की प्रगति हुई | आज यांत्रिक प्रगति की दौड़ में व्यक्ति अपनी मर्यादाओं, मूल्यों एवं संस्कारों को तोडता जा रहा है | आधुनिक काल में तीव्रगति से होनेवाले सामाजिक परिवर्तनों के फलस्वरूप सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हुई | कार ने सामाजिक

समस्या के बारे में लिखा है-"सामाजिक समस्या उस समय उत्पन्न होती है, जब हम किसी कठिनाई के प्रति चेतन हो जाते हैं और हमारी अभिरूचियों और यथार्थता के बीच खाई आ जाती है |"[२]

आज धर्मवाद, जातीय संकीर्णतावाद, सामाजिक असमानता, सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, बढ़ती हुई हिंसात्मक प्रवृत्ति, विकास की जटिलता आदि सामाजिक समस्याएँ बड़ी मात्रा में दृष्टिगोचर होती है |

पारिवारिक समस्याएँ :-

परिवार मानव-जीवन के सांस्कृतिक विकास के स्तर पर किसी न किसी रूप में अवश्य पाया जाता है | इस दृष्टि से परिवार एक सार्वभौमिक और सार्वकालिक संस्था रही है | मेकाइवर और पेज ने बतलाया है कि"सभी प्राथमिक समूहों में परिवार सबसे महत्त्वपूर्ण है | मानव समाज में असंख्य रूपों में अवतरित होने तथा परिवर्तनों के मध्य अपनी निरंतरता और स्थायित्व बनाये रखने की इसमें अपूर्व क्षमता है |"[३]

भारतीय समाज में बहुत समय तक संयुक्त परिवार का स्वरूप रहा | परंतु वर्तमान समय में परिवर्तित परिस्थितियों के कारण संयुक्त परिवार विघटित प्रतीत हो रहे है | स्वातंत्र्योत्तर काल में बिगड़ते टूटते मूल्यों के कारण पारिवारिक समस्याएँ दिनों-दिन बढती जा रही हैं | आधुनिक युग में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, औद्योगिकीकरण, पूँजीवादी सभ्यता का विकास, शहरीकरण की द्रुतगामी प्रक्रिया, महँगाई आदि कई कारण हैं; जिनके परिणाम स्वरूप परिवार में आपसी प्रेम,त्याग,स्नेह की भावना समाप्त हो गई है | निजी स्वार्थों के केंद्र में आ जाने से समस्त पारिवारिक संबंधों का क्षरण तेजी से होने लगा है | संयुक्त परिवार विघटित

होकर केंद्रीय परिवार में सिमट गए हैं | केंद्रिय परिवार भी विघटित होकर -हास के कगार पर खड़े हैं | डॉ.पुष्पपाल सिंह का कथन सार्थक है,"आज मानवीय रिश्ते उसी रूप में मान्य नहीं रहे जैसे पहले थे | संयुक्त परिवार के विघटन और रोजी-रोटी की तलाश में परिवार के सदस्यों का बाहर जाकर बस जाना आदि के परिणाम स्वरूप परिवार के सदस्य अपनी छोटी-छोटी इकाइयों तक ही अपने को सीमित रखने लगे | मानवीय संवेदना पर 'अर्थ' का स्वार्थ हावी होकर बहुत सारे आत्मिक संबंधों को बेमानी या बेमतलब का बोझ ढोने की रस्म सी बना रहा है | माँ-बाप, पिता-पुत्र, भाई-बहन, पति-पत्नी, भाई-भाई आदि के बीच अनाम दूरियाँ आ गई,जिसके कारण ये संबंध दरकने लगे |"[४] यही वर्तमान भारतीय परिवार की सही तस्वीर है |

तलाक, दांपत्य संबंध में तान-तनाव, ठंडापन, नैतिक मूल्यों का विद्रोह, स्वच्छंद यौनाचार,अलगाव जैसी प्रवृत्तियाँ परिवार की विघटनमयी स्थिति को प्रकट करके समाज जीवन के सम्मुख समस्या के रूप में उपस्थित हैं |

मनोवैज्ञानिक समस्याएँ :-

मनोविज्ञान 'मन' की क्रियाओं का विज्ञान है | मनोविज्ञान 'मन' सम्बन्धी विशिष्ट ज्ञान का प्रस्तोता है | साहित्य और मनोविज्ञान का विभिन्न सम्बन्ध है | हिंदी आलोचक डॉ.रामरतन भटनागर लिखते है-"साहित्य का विषय है 'मनुष्य' | मनुष्य का मन और उसकी आकांक्षाएँ संक्षेप में उसके चरित्र का सबकुछ....उसका 'भीतरी बाहरी' उसका 'आत्मपरक' उसकी स्वनिष्ठा उसकी परनिष्ठा में भी 'स्वनिष्ठा' इन सबकी विवेचना विश्लेषण ही तो मन का आँगन है |"[५]

मनोविज्ञान मनुष्य जीवन के व्यवहार का विश्लेषण है | डॉ.ममता शुक्ला मनोवैज्ञानिक और मनोविश्लेषण के अंतर को स्पष्ट करते हुए लिखती है- "मनोविश्लेषण एक विशेष युक्ति है जिसके द्वारा अज्ञात मन के अंदर स्थित द्वंद्व एवं भावना ग्रन्थिओं की जानकारी प्राप्त की जाती है | सभी प्राणियों का समुचित व्यवहार उनकी मानसिक शक्ति पर निर्भर करता है | मनोविश्लेषण इसी मानसिक शक्ति के उद्गमन और वितरण का अध्ययन करता है | इस प्रकार यह भी मानसिक उपचार विधि है | इसकी अपनी धारणाएँ तथा समस्याएँ हैं इसे एक स्वतंत्र विज्ञान माना जा सकता है |"[६]

मन का मनोवैज्ञानिक, तार्किक, बुद्धिगम्य विश्लेषण पिछले शतकों में सिग्मंड फ्रायड, एडलर, युग, पावलोव जैसे मनोवैज्ञानिकों ने किया | मन के विभिन्न स्तरों का विवेचन करते हुए मन के चेतन,अवचेतन मन, अचेतन मन जैसे विभाग करते हुए उनको परिभाषित किया | आज कथा साहित्य में भी मनोविश्लेषण को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है | कथा साहित्य में विशेषकर मनोवैज्ञानिक समस्याओं के निरूपण को सविशेष महत्त्व दे रहे है | आधुनिक युग में मानवजीवन इन्हीं समस्याओं से अधिकतर ग्रस्त है | जीवन में केवल सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक इत्यादि समस्याएँ ही नहीं होती, अपितु मनोवैज्ञानिक समस्याएँ भी होती हैं | दूसरे प्रकार की कई समस्याओं का उत्स मनोवैज्ञानिक समस्याओं में निहित होता हैं | प्रकट रूप में समस्या सामाजिक या पारिवारिक दिखायी पड़ती है, किंतु उनका मूल कहीं-न-कहीं मनोवैज्ञानिक समस्या में होता है |

आज मनुष्य दमन, परगमन, अहम की समस्या, विस्थापन की समस्या, प्रक्षेपण, कुण्ठा एवं निराशा,अंतर्द्वंद्व, संत्रास तथा तनाव आदि कई प्रकार की मनोवैज्ञानिक समस्याओं से पीड़ित है | मनोवैज्ञानिक समस्याओं से हर मनुष्य घिरा हुआ है |

आर्थिक समस्याएँ :-

व्यक्ति विकास, समाज विकास,राजनैतिक चेतना आदि चीज़ें अर्थसत्ता से बहुत प्रभावित है | स्वातंत्र्योत्तर युग में व्यक्ति जीवन में 'अर्थ' सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं प्रधान जीवन-मूल्य हो गया है |व्यक्ति का मूल्यांकन एवं महत्त्व 'अर्थ' के आधार पर आँका जाने लगा है | आधुनिक युग में 'अर्थ'ही हमारे जीवन को प्रभावित कर रहा है | आज 'अर्थ' ही जीवन की धुरी बन गया है | अर्थमूल्य ही मनुष्य को उच्च-पदस्य तथा अपदस्य बना रहा है | "हमारी अर्थव्यवस्था ने हमें भयंकर आर्थिक विषमता के कगार पर खड़ा कर दिया है |"[७] समाज का बहुसंख्यक वर्ग आर्थिक समस्या से संघर्ष करते टूट रहा है |

सत्ता-प्राप्ति की होड, प्रतिस्पर्धा, महँगाई से जूझते व्यक्ति का संघर्ष निर्धनता से पिसता व्यक्ति, रिश्वतखोरी,लुट-पाट, कालाबाजारी, मुनाफाखोरी, घोटाले तथा अन्य अपराध, संबंधों में आए बिखराव, मानवीय मूल्यों का -हास आदि पर गहराई से विचार करे तो पाते हैं कि इन सबसे मूल में 'अर्थ' ही है | सामान्य व्यक्ति का जीवन इसी अर्थ के कारण शिकंजे में जकड़ा हुआ है | स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद घोषणा की गई कि देश से गरीबी हटाई जाएगी और हर व्यक्ति 'अर्थ' के स्तर पर समान होगा | लोगों की स्थिति को सुधारने के लिए अनेक योजनायें बनाई गयी | "गरीबों कि स्थिति अब भी उसी प्रकार की है जैसे पहले थी | विभिन्न

कानून बने पर उनसे अमीरों का ही लाभ हुआ ।"[८] आज उच्च वर्ग धन के नशे में अंधा होकर जनता का शोषण कर रहा है | धन के नशे में मानवीय संवेदना को भूला दिया गया है | आज अनेकविध समस्याओं की जड में 'अर्थ' है,जो निर्धनता, बेरोजगारी, आर्थिक तंगी, शोषण, लुट-पाट, चोरी, हत्या जैसे अनेकविध समस्याओं के निर्माण का कारण है | 'अर्थ' ही समस्या की जड़ भी है और स्वयं समस्या भी |

राजनीतिक समस्याएँ :-

राजनीति जन-कल्याण,जन-पालन तथा जनता को समुचित रूप में शासित करके उनके अवैध, अनुचित, विध्वंसकारी, भ्रष्ट आचार पर अंकुश लगा उन्हें सत्य एवं शिव की ओर अग्रसर करती है | राजनीति और मानव का घनिष्ठ संबंध है |"जिन राजनीतिक मूल्यों को लेकर किसी राष्ट्र का ढ़ाँचा तैयार किया जाता है | उन्हीं के अनुरूप उस देश में मानव प्रतिमा निर्मित होती है |"[९] स्वतंत्रता पूर्व समाज में राष्ट्रीयता का मूल्य सर्वोपरि रहा है | हमारे राजनेताओं ने भारत भूमि को जन्मदात्री माँ के समान पावन मानकर उसका ऋण चुकाने में स्वयं को स्वाहा कर दिया | राजनेता जनता के लिए देवता बन गए,उन्होंने जनता में मानवीय मूल्यों को जगाया | परंतु स्वातंत्र्योत्तर भारत में राष्ट्रीय आदर्श का दर्पण ऐसा दरका कि उसके लगातार टुकड़े-टुकड़े होते जा रहे हैं | राजनीति के प्रांगण में अनीति का नग्न नर्तन हो रहा है | इस संबंध में डॉ.रमेश देशमुख का कथन सार्थ है-"कहो नीति, सुनो नीति, लिखो नीति, पर करो अनीति यही आज की राजनीति |"[१०]

वर्तमान युग में राजनीति में जो नैतिक मूल्यों का -हास होकर विविध समस्याएँ मुँह फैलाए खड़ी हैं, उसके पीछे प्रधान

कारण है, १.व्यक्तिगत स्वार्थ-पूर्ति की भावना २.पद एवं कुर्सी प्राप्त करने की अत्यधिक लालसा ३.दबाव-तंत्र ४.शक्ति,सत्ता,धन का मद ५.आदर्श हीनता, अर्थलालसा ६.दुर्बल एवं कमजोर जनता | इन स्थितियों और प्रवृत्तियों के फलस्वरूप राजनीति अनीति का शिकार होकर अनेक समस्याओं को जन्म दे रही हैं | आज के राजनेता जनसेवक नहीं बल्कि जन-शोषक बने हैं | सभी के सभी साधारण जनता का शोषण करके पालित-पोषित हैं | इस संबंध में डॉ.शशि जेकब का कथन विचारणीय है,"प्रजातांत्रिक मूल्य का पतन हो चूका है | भारत की निरीह जनता शोषण का शिकार हो रही है |"[११]इस प्रकार राजनीतिक मूल्यों की गिरावट ने राजनीतिक क्षेत्र के अतिरिक्त सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है और समस्त समाज भेदा-भेद नीति, धोखाधड़ी ,गुंडागर्दी, दोगली नीति, भ्रष्टाचारी आदि का शिकार होकर तड़प-कलप रहा है |

धार्मिक समस्याएँ :-

'धर्म' शब्द का अर्थ है-'धारण करने वाला' | धर्म वह है जो हम सबको एवं संपूर्ण विश्व को धारण करता है | यह एक सर्वस्वीकृत एवं सर्व व्याप्त विधान है | 'व्यावहारिक हिंदी' कोश में लिखा है-"धर्म नैतिक कर्तव्यों और नियमों की वह पद्धति है, जिसके पालन से व्यक्ति लोक और परलोक दोनों में यश और पुण्य का लाभ करता है |"[१२]

साधारणतया सांस्कृतिक आस्था जो सामाजिक उत्तरदायित्व के रूप में प्राप्त हो, धर्म है | भारतीय संस्कृति में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरुषार्थों को 'मुख्य' रूप में स्वीकारा गया है,उनमें 'धर्म' प्रथम स्थान पर अधिष्ठित है | धर्म मनुष्य को कर्म के लिए प्रेरित करता है | वह मनुष्य को अनाचार से बचाकर सदाचार की

ओर आकृष्ट करता है | उसे अनिष्ट से बचाकर संकट को सहन एवं वहन करने की शक्ति देता है | धर्म मनुष्य के जीवन को नियमित कर उसे श्रेय की ओर ले जाता है | डॉ.रमेश देशमुख लिखते हैं-"मानो भारतीय संस्कृति संदेश देती है कि धर्म का आचरण करते हुए अर्थ का संग्रह करो, अर्थ से कामनाओं की पूर्ति करो और मोक्ष को जीवन का अंतिम लक्ष्य मानो |"[१३]अर्थात राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सभी गतिविधियों का मूलाधार धर्म रहा है | मनुष्य के आचरण को हितकर बनाने के लिए 'धर्म' की सहायता तथा नियमन रहा है | परंतु आज धर्म के संचालक, पुरोहितों में स्वार्थ की भावना बढ़ रही है | धर्म का प्रचलित रूप नाना प्रकार की विसंगतियों, परस्पर विरोधी मान्यताओं, विद्रूपताओं से भरा हुआ है | धार्मिक क्षेत्र की विसंगतियों ने समाज-मंगल की अपेक्षा समाज-जीवन को खतरे में डाल दिया है | धर्म का रूप विकृत हो गया है, जिसके कारण अनेक समस्याएँ निर्माण हो रही हैं | धर्म मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनाने के लिए,समाज को बेहतर समाज बनाने के लिए, अनेक मानवीय समस्याओं के निराकरण के लिए होना चाहिए; किन्तु आज के समय की विडम्बना यह है कि धर्म के नाम पर बाह्याडंबर, कर्मकांड, अंधविश्वास जैसी विभिन्न प्रकार की समस्याओं का जन्म हुआ है |

इस प्रकार आज का समस्त समाज, समाज का प्रत्येक व्यक्ति उपर्युक्त किसी न किसी समस्या से त्रस्त दिखायी देता है | राजी सेठ के कथा साहित्य में उक्त समस्याएँ प्रतिबिंबित होती हैं | प्रस्तुत अध्याय में राजी सेठ के कथा साहित्य में प्रतिबिंबित समस्याओं पर विभिन्न शीर्षकों के माध्यम से प्रकाश डाला है |

राजी सेठ के कथा साहित्य में प्रतिबिंबित समस्याएँ:-

दांपत्य जीवन की समस्या :-

दंपति का तात्पर्य है विवाहित पति-पत्नी | परिवार में दांपत्य का अनन्य साधारण महत्त्व है | दांपत्य संबंध ही परिवार के केंद्र में होता है | परिवार का ठोस आधार दांपत्य संबंध होता है | पारिवारिक संबंधों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संबंध पति-पत्नी का होता है | परिवार का लघु तथा कम विस्तृत रूप केंद्रिय परिवार है और परिवार का लघुत्तर तथा लघुत्तर रूप दांपत्य संबंध है | स्वस्थ एवं सुखी दांपत्य-जीवन के लिए संयम, निष्ठा, समझदारी, परस्पर आदर तथा स्नेह,परस्पर विश्वास,सामंजस्य, शारीरिक एवं मानसिक संतुष्टि, त्याग-समर्पण आदि की नितांत आवश्यकता है | इनके समान तथा समुचित विकास से ही दांपत्य-संबंध स्वस्थ, सुंदर तथा अविच्छिन्न बना रहता है | हमारे परंपरागत विश्वास, मूल्य तथा आदर्श धीरे-धीरे विकलांग बनकर टूटने लगे है | पश्चिमी प्रभाव, स्त्री-पुरुष समानता, पुरुष की सामंतवादीवृत्ति, आधुनिकीकरण, स्त्री की आत्मनिर्भरता आदि ने पति-पत्नी के संबंधों को भी प्रभावित किया है | इसकी परिणति दांपत्य संबंधों के टूटने में स्पष्ट परिलक्षित हो पायी है |

पति-पत्नी के बीच उभरता अहंभाव, संदेह व अविश्वास, विचार व संस्कारों की टकराहट, नारी की स्वतंत्र्य व्यक्तित्व की चाह, पति की अधिकारवृत्ति आदि कई कारक है, जो दांपत्य जीवन में जहरीला धुआँ फैलाकर उसे विषाक्त बना रहे हैं | दांपत्य जीवन की समस्याओं के संबंध में पुष्पपाल सिंह का कथन विचारणीय है-"दांपत्य-संबंधों की दरार समकालीन जीवन का एक कटु सत्य है| विविध प्रकार और कारणों से आज पति-पत्नी के बीच दूरियाँ आ

गई हैं, विशेषत: शिक्षित और उच्च कहे जानेवाले वर्ग की यह नियति बन गई है; किन्तु फिर भी सामाजिकता के भय और सात जन्मों तक निभाई जानेवाली प्रीति के संस्कारवश स्त्री और पुरुष,पति-पत्नी के इस रिश्ते को ढोए चले जाते हैं |"[१४]

राजी सेठ के कथा साहित्य मे दांपत्य भोगते-झेलते,ढोते,उससे जूझते संदर्भ मिलेंगे | जैसे-

पति-पत्नी के बीच उभरता अहं-भाव: दांपत्य संबंधों में दरकन :-

पुरुष प्रारंभ से ही अहंवादी रहा है लेकिन अब स्त्री की शिक्षा और स्वावलंबन ने उसे भी अहंवादी बना दिया है | आज उसका अहं पुरुष के समक्ष झुकने या खुलकर बातचीत द्वारा स्थितियों या तनावों को स्पष्ट करके समस्या को सुलझाने नहीं देता | आधुनिकता, फैशन-परस्ती, पुरुष के अहं के कारण पत्नी की भावनाओं की उपेक्षा भी दाम्पत्य संबंधों में कड़ुवाहट घोल देती है |

राजी सेठ की कहानी 'अनावृत कौन' का प्रकाश अपने निजी स्वार्थो के बीच इतना आत्मकेंद्रित हो गया कि अपनी पत्नी की भावनाओं, उसके स्वीकार अस्वीकार के बीच झूलती उसकी मानसिकता से उसे कोई मतलब नहीं रहता | अपने बीच बढ़ रहे फासले की जिम्मेदारी वह अपनी पत्नी पर डाल देता है और वह समर्पण के रूप में हथियार डाल देती है तब उसके अहं की तुष्टि होती है |

"असल में तुम्हें लगता रहता है, मैं तुम्हारे साथ नहीं, औरों के साथ हूँ |'
'भाभी की बात और है प्रकाश.... वे दुख में हैं....जब....' 'तुमने कैसे समझा कि मैं भाभी के विरुद्ध हूँ ?' 'विरुध्द नहीं हो, पर वे कारण तो बन जाती हैं |' 'कारण वे नहीं.... तुम हो तुम.....तुम्हारा

रुख.....''वह फिर तेजी में आने लगा | 'मुमकिन है; मैंने एकदम हथियार डाल दिये | उसे अच्छा-सा लगा,परंतु दूसरे ही क्षण एका एक सहज हो जाने में संभवत:उसे अपने पौरुष की हानि लगी,अत:वह निर्विकार बैठा सिगरेट पीता रहा |''[१५]

पति-पत्नी के बीच पनपते व्यावसायिक से सम्बन्ध के कारण दांपत्य संबंधों में रिक्तता तथा विघटन:-

वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति भौतिक सुख-सुविधाओं से संपन्न चकाचौंध की दुनिया प्राप्त करने के लिए निरंतर दौड़ रहा है | बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने व्यक्ति को यांत्रिक व मशीन बना दिया | भावना की जगह बुद्धि व तर्क की प्रधानता हो गयी है | इस प्रकार व्यक्ति जीवन में आयी इस व्यावसायिकता ने पति-पत्नी के बीच प्रेम, सहयोग व सौहार्द्र भावना को भी प्रभावित किया | अब वह इस सम्बन्ध को भी व्यावसायिक रूप में लेने लगा | इसी वजह से पति-पत्नी के संबंधों में दरार आने लगती है |

राजी सेठ की 'एक यात्रांत' और 'ढलान पर' कहानियों में पति की व्यावसायिकता, बढ़ती महत्त्वाकांक्षा के कारण दांपत्य जीवन में दरार आने लगती है | 'एक यात्रांत' कहानी का पति व्यवसाय में ऊँचा पद प्राप्त करना चाहता है | वह ऊँचे पद की हवस के कारण हमेशा भागमभाग करता रहता है, किन्तु उसकी इस भागमभाग के कारण उसकी पत्नी के हिस्से में रिक्तता आ जाती है |

'ढलान पर' कहानी की चारु तथा उसके पति चेतन के बीच टकराहट का कारण है चेतन की बढ़ती महत्त्वाकांक्षा | चारु अपने पति से प्रेम व साहचर्य का एकाधिकार चाहती है,परंतु महत्त्वाकांक्षा की दौड़ में चेतन अपनी पत्नी के भावों को पढ़कर भी उसके

अनुकूल नहीं हो रहा | अपने पति चेतन को कामों में हमेशा व्यस्त पाकर चारु क्रोधित हो उठती है और कहती है-“तो फिर ब्याह कर क्यों लाया ?ऐसी क्या उतावली थी ? काम....काम....काम हर समय वही सब लदा रहता है, पूछो तो कहेगा, बाहर इतनी बड़ी दुनिया से मुकाबला है, तुम वहाँ खड़ी होतीं तो जानतीं !”[१६]

यौन-असंतुष्टी के कारण दांपत्य संबंधों में टूटन :-

वैवाहिक संस्था का मूलाधार‘यौन-संतुष्टि’ है | पति-पत्नी के बीच सम्बन्धों में तनाव का एक बुनियादी कारण सेक्स भी है | यदि यौन संबंधों में पति-पत्नी में किसी एक की यौन-तुष्टि नहीं हो पाती तो दांपत्य जीवन समस्याओं, तनावों से भर जाता है | परिणाम स्वरूप दांपत्य संबंधों में टूटन, असंतोष तथा किसी तीसरे की उपस्थिति की संभावना रहती है | मोहन राकेश का मानना है कि “नारी को भी शारीरिक भूख लगती है | आप उस भूख को तिरस्कृत करेंगे तो वह अन्य मार्ग का चयन करेगी |”[१७] असंतृप्त यौन जीवन व्यक्ति को कुंठाग्रस्त बना देता है | आज की नारी अपने जीवन को कुंठाग्रस्त बना देना नहीं चाहती | वह पति से प्रेम और स्वीकृति न मिलने के कारण अपने लिए अलग रास्ता ढूँढ़ लेती है | इसमें वह कोई पाप बोध का अनुभव नहीं करती |

राजी सेठ की ‘ढलान पर’ कहानी की चारु अपनी यौन-असंतुष्टी के कारण तनाव में जी रही है | चारु की शारीरिक क्षुधा का शमन न होने पर वह तिलमिला उठती है और कहती है-“कहता है,आजकल आराम मिल रहा है,और दिन-दहाड़े सो जाता है | मैं सच में सोचा करती हूँ, उसकी अपनी कोई ज़रूरत नहीं है क्या ?”[१८]पति चेतन की काम संबंध में निष्क्रियता देखकर चारु नैली नामक पुरुष की ओर आकर्षित हो जाती है |

राजी सेठ की 'अनावृत कौन' कहानी में भी उक्त समस्या दृष्टिगोचर होती है | 'अनावृत्त कौन' कहानी की नवविवाहिता घर में दु:खद घटना घटने के कारण अपने पति प्रकाश के कामेच्छा की पूर्ति नहीं कर पाती | अपनी पत्नी की कामसंबंधों में नीरसता देख प्रकाश खीज उठता है-"रात को दरवाजा बंद कर लेने के बाद उसकी दबी हुई खीज एकाएक उद्दंड हो उठती है |"[१९]

इस प्रकार यौन-संतुष्टि न होने पर पति-पत्नी के संबंधों में कटुता आ जाती है | राजी सेठ की 'ढलान पर' और 'अनावृत कौन' कहानी के पति-पत्नी के बीच एक दूसरे के प्रति जो असंतोष था, उसके मूल में 'यौन संबंधी समस्या' ही थी |

व्यक्तित्व-उपेक्षा, सन्तान लालसा के कारण दांपत्य संबंधों में दरकन :-

पति द्वारा पत्नी के स्वतंत्र्य व्यक्तित्व की उपेक्षा के कारण भी दांपत्य-संबंध की मधुरिमा नष्ट होकर मनमुटाव तथा असंतोष की स्थिति पैदा होती है | राजी सेठ की 'अपने विरुद्ध' कहानी के पति द्वारा अपनी पत्नी की स्वतंत्र व्यक्तित्व के बलिदान की माँग पत्नी के हिस्से रिक्तता छोड़ देती है | कहानी की नायिका रूचि की लेखिका बनने की महत्त्वाकांक्षा उसके पति श्याम के कारण अवरुद्ध हो जाती है | वह अपनी पत्नी से स्वतंत्र व्यक्तित्व के बलिदान की माँग करता हुआ कहता है-"किसी भी चीज़ को तुमसे ज़्यादा प्यार नहीं करना चाहता, और किसी को तुम मुझसे अधिक करो,सह नहीं सकता |"[२०]श्याम के इस माँग को रूचि स्वीकार तो करती है, लेकिन वह घुटन महसूस करती है |

दांपत्य-संबंधों को विषम, असफल, विघटित तथा कटु बनाने वाले कारकों में संतान लालसा एक कारक है | जो सुखी दांपत्य

जीवन में दरार पैदा करता है | राजी सेठ की कहानी 'अकारण तो नहीं' के दांपत्य में संतान लालसा के कारण ही दूरियाँ निर्माण होती है | 'अकारण तो नहीं' कहानी की दीपाली को उसके पति सुधाकर के शुक्राणु कमजोर होने के कारण कोई संतान नहीं हो रही थी | स्वयं सुधाकर भी इस बात को जानता है,परंतु वह सारा दोष अपनी पत्नी दीपाली पर डाल देता है | अन्त में दीपाली अपने पति के दोहरे व्यवहार से ऊबकर घर छोड़ जाने और पुन: न लौटने का निर्णय लेती है | वह सुधाकर को कहती है-"अपनी बात पर तो कायम रहो सुधाकर | कुछ तो ठीक से करो | मैं तो वैसे भी जाने को हूँ सुबह | ऐसे ही रहना होगा तुम्हें.....पता नहीं कब तक.....'"[२१]

विचार व संस्कारों की टकराहट के कारण दांपत्य जीवन में कड़वाहट तथा टूटन :-

दांपत्य जीवन की नींव को मजबूत बनाने में वैचारिक समानता और समदृष्टिकोण की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है | पति-पत्नी के बीच स्वभाव, विचार व संस्कारों की असमानता भी आपसी टकराहट को जन्म देती हैं | पति-पत्नी का एक दूसरे को समझ न पाने के कारण दांपत्य टूट भी जाता है | नए और पुराने विचारों के संघर्ष के कारण दांपत्य जीवन दु:खी बन जाता है | पति-पत्नी को परस्पर के विचारों, रुचियों तथा भावनाओं का आदर करना चाहिए | अन्यथा दांपत्य जीवन में भावात्मक अलगाव, टूटन पैदा होकर दांपत्य जीवन की मधुरिमा नष्ट होती हैं | गृहस्थी रूपी गाड़ी को सुचारू रूप से चलाने के लिए पति-पत्नी के विचारों में समानता होना अनिवार्य है |

राजी सेठ की कहानी 'किसके पक्ष में' का दापंत्य वैचारिक भिन्नता के कारण टूट जाता है | बेला दबंग प्रकृति की सुशिक्षित

स्त्री है: परंतु उसका पति अपनी वंशानुगत प्रवृत्ति के कारण परंपरित विनम्रता व समर्पण का भाव लिए हुआ है | बेला को अपने पति का यहीं स्वभाव स्वीकार्य नहीं है | बेला अपने आपको पति के विचारों के अनुरूप ढाल नहीं पाती | उसका कहना है-"यदि पुरुष ताकतवर है,समर्थ है,तो वह अपने आप छोड़ देगी पूरी तरह | सुरक्षा उसे भी चाहिए | उसे भी अच्छा लगता है धूप सेंकना | नहीं तो दांपत्य में अनिवार्य मान ली गयी गिलगिली दासता को वह समर्पित नहीं होगी, कभी नहीं |"[२२]वह घर छोड़कर चली जाती है | बेला अपनी बच्ची के बारे में भी नहीं सोचती |

'अनावृत कौन' कहानी के पति-पत्नी के बीच वैचारिक टकराहट के कारण ही कड़ुवाहट आ जाती है | प्रकाश न अपनी पत्नी के दृष्टिकोण को समझ पाता है और न पत्नी अपने पति के दृष्टिकोण को समझ पाती है | प्रकाश कैबरे जाना चाहता है, किन्तु प्रकाश की पत्नी कैबरे जाना नहीं चाहती | वह कहती है - "कैबरे देखते मुझे लगता है कि केवल मैं ही नहीं...आसपास की...संसार की सभी स्त्रियाँ अनावृत्त होती जा रही हैं...एक-एक करके उनके कपड़े झरते जा रहे है...और...और तुम सब उन्हें देख रहे हो | आँखे गड़ाए...वहशियों की तरह....| कितना घृणित लगता मुझे....ये सब |"[२३] पत्नी के इस बात से प्रकाश का उत्साह भंग होता है | दोनों पति-पत्नी में दूरियाँ आ जाती है |"

पति की सामंतवादी,अत्याचारी वृत्ति के कारण दांपत्य में टूटन :-

भारतीय समाज में पुरुष प्रारंभ से ही सामाजिक व पारिवारिक कार्यो में सर्वेसर्वा रहा है | अब जब कि परिस्थितियाँ बहुत बदल चुकी हैं जहाँ पत्नी पति से सहयोग व मित्र जैसे व्यवहार की अपेक्षा रखती हैं वहाँ पति द्वारा पत्नी पर शासन

करना, हुकुम चलाना जैसी सामंतवादी, अधिकारवृत्ति ने भी पति-पत्नी के बीच की दूरियों को बढ़ाया है |

राजी सेठ की 'अपने दायरे' कहानी की नायिका अपने पति के अधिकारवृत्ति के बारे में डायरी में लिखती हैं, "नहीं, नहीं, नहीं अधिकार प्रयोग उत्तर नहीं हो सकता किसी बात का, स्नेह से भरी मनुहार हो सकता है | सत्ता केवल अधिकार का होना जानती है, पाना नहीं जानती |"[२४]

राजी सेठ की 'उसी जंगल में' और 'अन्धे मोड़ से आगे' कहानी का दांपत्य पति की अत्याचारीवृत्ति के कारण टूटता हुआ दिखाई देता है | राजी सेठ की 'उसी जंगल में' कहानी का पति आधी रात अपने दोस्तों को लेकर घर आता है और अपनी पत्नी को गोश्त बनाने को कहता है | पत्नी जब गोश्त बनाने से इनकार करती है तब वह उसे बुरी तरह से मारता है-"पता क्यों नहीं था ? रोज़ देखती नहीं है ?...ढोर चरते हैं तेरे भेजे में..अक्ल ठिकाने लगा दूंगा चार दिन में, एक ठोकर और....नितंबों के नीचे का भाग पीड़ा से तिलमिला उठता है |"[२५]'उसी जंगल में' कहानी की पत्नी पति के इसी अत्याचारों से तंग आकर गर्भावस्था में ही घर त्याग देती है |

'अन्धे मोड़ से आगे' कहानी की नायिका अपने पति के अत्याचारों से तंग आकर उसे तलाक देती है और अपने बॉस मिश्रा से शादी कर लेती है | नायिका अपने पति के अत्याचारीवृत्ति के बारे में कहती है,"उसके हाथ सीधे गालों पर वार करते थे ! गालियाँ देता था, मारता था, आए दिन गुस्से में सारे बर्तन पटकता था | ज़िद चढ़ जाए, तो माँ के घर जाने नहीं देता था और रुलाई आती हो तो उस क्षण को अपने आधिपत्य की हिंसा से, तोड़-फ़ोड़कर मन चिथड़े-चिथड़े कर देता था |"[२६]

पति-पत्नी के बीच आपसी सामंजस्य व सहयोग का अभाव: दांपत्य में तनाव :-

पति-पत्नी के बीच असंतोष का मुख्य कारण एक-दूसरे के प्रति आधारभूत समझ की कमी है | जहाँ शिक्षा और आधुनिकता बढ़ी है वहीं इस 'अंडरस्टेन्डिंग' का अभाव बढ़ रहा है | विवाह का अर्थ है,कुछ पाना और कुछ लेना-चाहे इसे हम समर्पण, संरक्षण या परस्पर किये गये समझौते का फल कह सकते है | जहाँ केवल अपने साथी से लेने की लालसा हो तथा किसी प्रकार के समझौते की गुंजाइश न हो वहाँ दांपत्य संबंधों में टकराहट पैदा होकर दांपत्य जीवन टूटन की कगार पर आ खड़ा होता है | पति या पत्नी तनाव में जीने लगते है |

राजी सेठ की 'अपने विरुद्ध' कहानी की नायिका लेखिका बनना चाहती है | नायिका को लगता था कि उसके पति को भी लेखन प्रति रूचि और लेखक जाति के प्रति लगाव होने के कारण पति का उसे पूरा सहयोग मिलेगा, परंतु नायिका के पति श्याम में अपने साथी से लेने की वृत्ति थी | वह नहीं चाहता था कि उसकी पत्नी लेखन में प्रवृत्त होकर उसे भूल जाए | वह नायिका द्वारा लिखी कविताओं को छपवाने से इनकार कर देता है | नायिका को अपने पति का सहयोग नहीं मिलता | वह पूरी तरह टूट जाती है- "मुझे जाने क्यों लगने लगा कि मेरे भीतर का लेखक मर रहा है ,प्रोत्साहन के बिना,आश्वस्ति के बिना | आज देवजी की बात करते वह जिसे कहता है नहीं देख सकता, उसे ही देखता रहा वह सतत- मेरे भीतर पनपने को आतुर होती रचनात्मकता की भूख और मेरा तिल-तिल मरना | क्या वह नहीं जानता,उसी ने तोड़ा है मुझे इस तरह, और इतना कि....."[२७]

'अनावृत कौन'कहानी का प्रकाश भी सिर्फ अपनी पत्नी से लेना ही चाहता है फलस्वरूप वह अपनी पत्नी को मानसिक चोट पहुँचाता है-"प्रकाश ऐसा करके मुझे दण्ड दे रहा है, स्पष्ट था....! एक निर्मम फ़ैसला....सुलह से इन्कार करके......समझने-समझाने का कोई मौक़ा न देकर..."[२८]यही टकराहट उन्हें अलग कर देती हैं- "नामुमकिन ! तुम्हारे साथ एकदम नामुमकिन ! यू आल्वेज़ मेक मी फ़ील स्मॉल | तुम्हारे आतंक में मैं नहीं रह सकता...| हर वक्त यह समझाया जाना कि मैं ग़लत हूँ...सिर्फ़ मैं ही ग़लत हूँ | तुम्हारे सो-कॉल्ड सिद्धांतों की मुझे परवाह नहीं है | तुम....तुम.....यू कैन टेक देम अवे विद यू..... आय डैम केयर.....!"[२९]

पति-पत्नी के बीच संदेह व अविश्वास के कारण टूटन :-

पति-पत्नी का एक-दूसरे पर अविश्वास व संदेह दांपत्य जीवन में विष घोल देता है | आज हम आधुनिक व कितने ही प्रगतिशील क्यों न हो "रूढ़िवादी परिवार और समाज स्त्री-पुरुष की कल्पना यौनगन्ध रहित नहीं कर पाता | रूढ़िवादी परिवार और समाज ही नहीं,बल्कि पुरुष और स्त्री भी अपने संदर्भ में यह बात स्वीकार नहीं कर पाते |"[३०] पति का पत्नी के प्रति अविश्वास तथा संदेह अत्याधिक विकराल होता है | वह दांपत्य जीवन को पूर्णरुपेण विघटित कर पत्नी को अनन्त नाटकीय यातनाएँ भुगतने के लिए समाज जीवन में छोड़ देता है |

राजी सेठ की 'अपने दायरे' कहानी के दांपत्य संबंधों में मनमुटाव है, उसका कारण पति का पत्नी के प्रति अविश्वास तथा संदेह है | कहानी का पति अपनी पत्नी पर उसके पूर्व प्रेमी को लेकर संदेह करता है | पति के इसी अविश्वास के कारण पत्नी जीवन में यातनाएँ भोग रही है | पति का संदेह पत्नी के मन में

आक्रोश निर्माण करता है | वह अपने जीवन की यातनाओं को डायरी में लिखती है-"यह क़लम तुम्हारे विरुद्ध उठे, ऐसा मैंने कभी नहीं चाहा था.., परन्तु आक्रोश, क्षोभ और विरोध का एक बवंडर मेरे मन में हर घड़ी मंडराता है | तुम्हारी कटुता, अविश्वास और संदेह के विरुद्ध | उसे पार किये बिना सहज नहीं हुआ जा सकता | इससे मुक्ति पाए बिना सुंदर नहीं कहा जा सकता, सुंदर नहीं हुआ जा सकता | कोई शुरुआत नहीं की जा सकती |"[३१]

'दलदल' कहानी की नायिका आरती अपने पति अमर को बॉस को कहकर नौकरी दिलवाना चाहती है | इसलिए वह अपने बॉस के आसपास एक अदृश्य छाया की तरह घूमती रहती है | परंतु अमर अपनी पत्नी और बॉस के संबंधों को संदेह की नजर से देखता है | आरती जब अमर को बायोडेटा तैयार करने को कहती है, तब अमर अपनी पत्नी पर अविश्वास दर्शाता हुआ कहता है- "ऐसी कोई गरज अपनी नहीं है | मैं नहीं चाहता गरज की आड़ में तुम बॉस के आगे-पीछे पल्लू लहराती रहो | समस्याएँ सबके घर होती हैं |"[३२]

आर्थिक समस्या :-

हमारी वर्तमान समाज व्यवस्था में उच्च, मध्य एवं निम्न वर्ग त्रयी का अस्तित्व है | उच्चवर्ग आर्थिक समस्या का उद्गाता है | मध्यवर्ग और निम्नवर्ग आर्थिक अभाव के संकट से त्रस्त है | आय का एकमात्र साधन नौकरी,बढ़ती महँगाई, अल्पवेतन आदि कई कारण हैं, जिन्होंने मध्य और निम्नवर्ग को अंदर-बाहर से तोड़ा है | अर्थ के अभाव में ये दोनों वर्ग शारीरिक तथा मानसिक कष्ट भुगत रहे हैं | इस संबंध में डॉ.रमेश देशमुख का मत विचारणीय है-"मजदूर किसान एवं मध्यवर्गीय परिवार आर्थिक

शोषण के शक्तिशाली शिकंजे में फँसे नाली के कीड़े की तरह रेंगते हुए एक दयनीय स्थिति को पहूँचते जा रहे हैं, जहाँ समय-समय वे बिलबिलाते तो हैं, किन्तु किसी न किसी तरह विस्फोटक स्थिति से अपना दामन बचाते रहते हैं |"[33]

राजी सेठ की 'समांतर चलते हुए', 'अमूर्त कुछ', 'अस्तित्व से बड़ा', 'पुन: वही', 'किसका इतिहास', 'योग-दीक्षा', 'नगर-रसायन', 'तुम-भी', 'मीलो लंबा पुल' आदि कहानियों और 'निष्कवच' उपन्यास के 'वृत्तांत दो' में आर्थिक समस्या का चित्रण हुआ है |

अर्थाभाव तथा आर्थिक तंगदस्ती की समस्या :-

अर्थाभाव की समस्या मनुष्य की इच्छाओं तथा महत्त्वाकांक्षाओं की असामयिक मृत्यु, कुण्ठाजन्य विवशता, संबंधों में ठंडापन, पारिवारिक संबंधों में दूरियाँ तथा अनेक मनोविकृतियों को जन्म देती हैं | राजी सेठ के कथा साहित्य में अर्थाभाव की समस्या का अंकन बड़ी मात्रा मे हुआ है |

'समांतर चलते हुए' कहानी की मंजुला आर्थिक तंगी के रहते हुए अपने प्रेमी से विवाह नहीं कर सकती | मंजुला का परिवार आर्थिक अभाव में है | परिवार आर्थिक अभाव में होने के कारण मंजुला ने अपने प्रेमी तथा अपना विवाह तक अनदेखे कर दिये हैं, क्योंकि "वह समझती है,यह बहुत संभव नहीं है उसकी परिस्थितियों में | ऐसे विपन्न समय में वह अपने को परिवार से विलगा कर

नहीं आ सकती | पक्षाघात से पीड़ित और वर्षो से घरवालों की सेवा सुश्रूषा पर आश्रित पिता,युद्ध की भेंट हो गया बड़ा भाई, दो छोटी बहनें;जिनका लिखना-पढ़ना जारी था |"[34]अर्थाभाव के कारण मंजुला सिर्फ जीविकोपार्जन की मशीन बन गई है |

'अमूर्त कुछ' कहानी के कप्पी को अर्थाभाव के कारण ही कच्ची उम्र में पढ़ाई छोड़नी पढ़ती है | कप्पी को अपने पिता का दाहकर्म अपनी माँ का मंगलसूत्र बेचकर करना पडता है | अपनी माँ के मुँह से दीनता से लथपथ कोई बात सुनने से पहले ही वह पुस्तकों का थैला नदी में फेंक आता है और आठवीं कक्षा का यह छात्र अपने उत्तरदायित्व पर व्यंग्य करता हुआ अपने मित्र से कहता है-"देख यार,अपन तेरे से आगे निकल गये |"[३५] वह कर्मियों की भीड़ में एक गुमनाम चेहरा बन जाता है | अब वह हमेशा किसी वर्ग विशेष के बेजान प्रतीकों द्धारा पहचाना जायेगा |

'अस्तित्व से बड़ा' कहानी का प्रेमी 'अर्थ'के कारण अपनी प्रेमिका रिनू को खो देता है | यदि उसके पास नौकरी,पद,पैसा आदि सब होता तो वह सुमंत की ओर क्यों आकृष्ट होती, क्यों उसे वरीयता दे कर उससे विवाह करती ? रिनू भी अपने प्रेमी की इस स्थिति को समझती हुई सोचती है, "अतिक्रमित होती हुई वह सीमाएँ जिनके रहते हुए वह मुझे इस घर से आसानी से नहीं ले जा सकता था | (जानता था जाति की, शिक्षा की, पद की और कुछ हद तक धन और स्टेट्स की सभी सीमाएँ जो मेरे पिता की दृष्टि में वह लाँघने में असमर्थ था, आर्थिक स्वतंत्रता की चौखट तक पहुँचते पहुँचते लाँघी जा सकती हैं |) मुझे एकाएक लगा कि जीवन में इस विकल्प को स्वीकारने की एकमेव परिणति है,उसके साथ जीवन की सहयात्रा को चुनना |"[३६]

'पुन:वही' कहानी का देवव्रत पिता की मृत्यु के बाद आर्थिक दबाव में है | सारी जिम्मेदारियाँ अब उसे ही निभानी हैं | वह पिता के नाम पर दी जानेवाली दान राशि के बारे में सोचकर कातर हो उठता है, "उसने निश्चय ही सोचा था कि इतनी बड़ी राशि को

त्याग पाना उसके पितृप्रेम की ही अभिव्यक्ति है, उसमें उसके वैभव के आश्वासन को पुष्ट करने वाला कुछ नहीं है |"[३७] आर्थिक तंगी के बारे में सोचकर वह पंडित को राशि की घोषणा करने से मना कर देता है | वह कहता है,"घोषणा मत कीजिए पंडितजी ! मैं पिता के लिए क्या करता हूँ,यह मेरा अंदरूनी मामला है |"[३८]

'किसका इतिहास' कहानी का परिवार निर्धनता की समस्या से त्रस्त है | यह परिवार अभावग्रस्त जीवन जी रहा है | न ढंग का पहनने को है और न मन भर खाने को-"साबुन घिस भर देने से दूसरे दिन के लिए वही जोड़ा उजला हो जाता था | वही थाली बार-बार मांजी जाने पर चमक जाती थी | एक ही पतीली में चाय, दाल और कभी-कभी सब्ज़ी पक जाती थी और उसी में रात को सवेरे नमकवाली रोटी के साथ खाने को छाछ के लिए पेंदा-भर दही जम जाता था | डालडा भी घी जैसे लगता था | उसकी छौंक ऐसी क्या बुरा था....... | अचार कच्चे आम काट कर नमक-मिर्च डाल देने से ख़ासा खाने लायक़ हो जाता था; तेल, हल्दी, सौंफ, मेथी, मर्तबान की जरूरत क्या थी ?"[३९]

योग-दीक्षा'कहानी आर्थिक अभाव के मार को सह रही लड़की की कहानी है | लड़की योग साधना में प्रवीण हो कर योग दीक्षा पर निकालती है | वह योग की दीक्षा देकर अपने परिवार की आर्थिक सहायता करती है | तीन तीन स्त्रियों को योग की दीक्षा देकर कठिन दौडधूप के बावजूद लड़की को अपनी माँ के सामने दाल तक के लिए गिडगिडाना पड़ता है | भूख से व्याकुल होकर जब वह खाने को बैठती है, तो पतेली में दाल नहीं होती थी | उसे सूखी सब्जी के साथ रोटी खानी पड़ती थी |

'नगर रसायन' कहानी की नायिका आर्थिक तंगी के कारण मानसिक तनाव में जी रही है | आर्थिक तंगी के रहते वह अपनी छोटी छोटी महत्त्वाकांक्षाओं कों भी पूरा नहीं कर पाती | केशव के आ जाने से महानगर के कठिन जीवन को अकेले भोग रही नायिका खीज उठती है | वह मन में भी अभावग्रस्तता का लेखा-जोखा करते जा रही है, "गाड़ी का पेट्रोल.....दूध का बिल.....आटे के टीन का दस दिन में खड़खडाने लगना......सब्जी की कीमतें...पानी की दिक्कत.....खाटों की दिक्कत......बिस्तरों की खींचतान......काम की अधिकता से नौकरों का रातोरात चुपचाप भाग खड़े होना | मन में मनपसंद ब्रश तक खरीदने का साध एक स्वप्न बनकर रह जाती है, यों बाजार जाओं.....|"[४०]

अर्थाभाव की स्थिति मनुष्य को अपदस्य बना देती है | कभी-कभी वह मनुष्य को नैतिक-मूल्यों को तोड़ने के लिए भी विवश कर देती है | 'तुम भी' कहानी का अनाज की रखवाली करने वाला जिम्मेदार कर्मी इसी अर्थाभाव के कारण अनाज की चोरी करने लग जाता है | कर्मी की पत्नी अपनी पुत्री के लिए सोने की कण्ठी बनवाना चाहती है | किन्तु कण्ठी बनवाने के लिए उसके पास उतने पैसे नहीं है | इसलिए वह अपने पति से कहती है, "इतना करते हो,तो दो-चार बोरियाँ और...."[४१]अर्थात मनुष्य की आर्थिक मजबूरी चोरी,डाका-डकैत आदि अनेक समस्याओं को जन्म देकर सामाजिक व्यवस्था को क्षति पहुँचाती है |

आर्थिक तंगी के कारण 'मैं तो जन्मा' ही कहानी की नयना जैसी लड़कियाँ अपनी इच्छा से विवाह भी नहीं कर सकती | "वह पैसों की पोटली पिता के पायताने रख देती है |"[४२] 'मीलों लंबा पुल' कहानी में अमेरिका से आने वाले बेटे के लिए कूलर खरीदने के

उपक्रम में एक मध्यमवर्गीय पिता को बेहद संघर्ष करना पड़ता है | कूलर खरीदने पर वह दांपत्य स्वयं के लिए उसे कभी नहीं चलाते- "लाख कहो की चलाओ या न चलाओ, किराया तो उतना ही लगेगा-सीजन का छः सौ रुपया ! पर पलेथन ?…यह बिजली के बिल का भुग़तान कौन करेगा | वैसे ही पसीने की धारें चलतीं | घर के सामने की झुलसी हुई घास वाले मैदान में छिड़काव किया जाता | खरखरी खाटों पर पड़ी दरियां तार की जाती | हाथ के पंखे सिरहाने रखे जाते | आठ आने की बरफ से दूध-पानी को ठंडा कर देने वालीकच्ची लस्सी बनती, पर कूलर न चलता |"[४३]

'निष्कवच' उपन्यास के वृत्तांत दो का नायक अपने आर्थिक अभावग्रस्तता को दूर करना चाहता है | इसलिए वह अमेरिका रूपया कमाने जाता है ताकि परिवार की अभावग्रस्तता को दूर कर सके | परंतु उसे मार्था जैसी लड़की के संरक्षण में रहना पड़ता है | आर्थिक तंगी के कारण वह तीन साल तक स्वदेश नहीं लौट पाता- "पूरे तीन साल | इतने ईंट पर ईंट की तरह रखे जाते एक हजार पंचानवे दिन | आया था तो इतने दिनों पलटकर न जा पाने की बात सोच भी नहीं सकता था |"[४४]

अर्थ की अतिरिक्त लालसा की समस्या :-

अर्थलालसा एक ऐसा नशा है जो एक बार सिर पर सवार होता है तो उतर ही नहीं पाता | अर्थ की अतिरिक्त लालसा के कारण दांपत्य में दरार पैदा हो रही है |

राजी सेठ की कहानी 'एक यात्रांत' का पति आर्थिक संपन्नता की दौड़ में अपनी पत्नी का साहचर्य एवं प्रेम खो देता है | "प्रभुता के प्रति एक न सँभाली जा सकनेवाली लुब्ध गिड़गिड़ाहट

उसे पत्नी की दृष्टि में बौना देती है |"[४५] परंतु वह अपने से ऊँचे पदों की ओर सतत आकर्षित है |

नारी समस्या :-

नारी शिक्षा, नारी जागरण, वैज्ञानिक आविष्कार, पाश्चात्य विचारधाराएँ एवं संस्कृति का प्रभाव आदि के सम्मिलित रूप ने नारी की स्थिति और गति में काफी परिवर्तन लाए है | उसे घर की चारदीवारी से बाहर आकर दुनिया की नई रोशनी देखने के सुअवसर प्राप्त करा दिए है | परंतु भारतीय नारी की वास्तविक स्थिति कुछ और है | आज भी पुरुष के अंदर कुंडली मारकर बैठा हुआ सामंतवादी पुरुष नारी के शोषण पर तुला है | सामाजिकों की दृष्टि आज भी उसके प्रति उदात्त नहीं हो पायी हैं |

"यंत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता: |"[४६]हमारी संस्कृति यह समझती आयी है कि स्त्री पूज्या है | जहाँ नारियों का सम्मान होता है,वहाँ देवता निवास करते है | परंतु आज भी नारी को जीवंत जलाया जाता है, उसके साथ बलात्कार जैसा घिनौना कृत्य किया जाता है | डॉ.मृत्यंजल उपाध्याय ने ठीक कहा है, "तमाम सुधारों और दावों के बावजूद औसत नारी की स्थिति आज भी दयनीय है |"[४७]क्योंकि सदियों से जमी काई को एकदम मिटाना असंभव है | आज के युग में नारी की कुछ समस्याएँ ऐसी है, जो बराबर मध्यकाल से हस्तांतरित हो गई हैं | तमाम प्रयासों के बावजूद भी उनका अस्तित्व कहीं-कहीं नजर आता है |

राजी सेठ के साहित्य में विविध समस्याओं से पीड़ित नारी का चित्रण दृष्टिगोचर होता हैं |

कामकाजी नारी की समस्याएँ:-

पिछले कुछ वर्षों से पढ़ी लिखी नारियों ने आर्थिक स्वतंत्रता

को अपने व्यक्तित्व एवं अस्तित्व के लिए आवश्यक माना है | वह हर क्षेत्र में पुरुष के कंधे-से-कंधे मिलाकर काम कर रही है | किंतु कहीं भी कामकाजी नारी की स्थिति संतोषजनक नहीं है | घर और बाहर उसका शोषण हो रहा है | इन दो मोर्चो पर लड़ते वह थक-टूट रही है |

कामकाजी नारियों में विवाहित और अविवाहित दोनों प्रकार की नारियों की अपनी अलग-अलग समस्यायें है | राजी सेठ की 'समांतर चलते हुए', 'मैं तो जन्मा ही','किस्सा बाबू बृजेश्वरजी' आदि कहानियों में कामकाज नारियों की समस्या का चित्रण हुआ है |

अविवाहित कामकाजी नारी की समस्याएँ :-

अविवाहित कामकाजी युवतियाँ परिवार के भरणपोषण में ही अपने ढरकते यौवन को अनुभूत कर रही है | घरवाले जान बूझकर उसकी शादी में दिलचस्पी नहीं लेते | "उन्हें लगता है, लड़की जब तक अविवाहित है तब तक घर की आर्थिक जिम्मेदारियों में हाथ बँटाती रहेगी ,शादी हो जाने पर आर्थिक सहायता खत्म हो जायेगी |"[४८]घर की बड़ी लड़की होने के कारण पारिवारिक जिम्मेदारियों को उसे उठाना पड़ता हैं |

राजी सेठ की 'समांतर चलते हुए' कहानी की नायिका मंजुला घर की जिम्मेदारियाँ को निभाने वाली जीविकोपार्जन की मशीन बनकर घर की सिरमौर होकर एक ऊँचाई पर स्थिर बैठी है-"पक्षाघात से पीड़ित और वर्षो से घरवालों की सेवा-सुश्रूषा पर आश्रित पिता,युद्ध की भेंट हो गया बड़ा भाई,दो छोटी बहनें जिनका लिखा पढ़ना जारी था |"[४९] इन सब जिम्मेदारियों के तले दबकर उसकी अपनी सारी भावनाएँ और इच्छायें दम तोड़ रही थी |

'मैं तो जन्मा ही' कहानी की नयना भी घर की जिम्मेदारियों के तले दबी है | नयना के पिता पत्नी के अभाव में अपने कानों में तेल और बड़ी बेटी की नाक में गिरस्ती की नकेल डाले निश्चिंत बैठे है-"नयना का एक भाई असहमत,एक अपंग और एक बहन छोटी अबोध,जिसे जन्म देते उसकी माँ परलोक सिधारी थी |"[५०] नयना अपने पिता के दबाव के कारण अपने विवाह का मुद्दा कभी उठा नहीं पाती | जिसके कारणवश उसे अपने प्रेमी से दूर रहना पड़ता है | इसी कहानी की मिता की स्थिति भी नयना जैसी ही है | चिक्की मिता की स्थिति के बारे में नायक को कहती है -"आपको मालूम है वह घर में पैसे भी देती है और अपनी मरजी से शादी भी नहीं कर सकती | एकदम सख्त हिसाब है उनके यहाँ...|"[५१]

'योग-दीक्षा'कहानी के बड़ी बेटी की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है | वह भी योग का ट्यूशन करके अपने घर को सँभालती है | माँ को बेटी कमाना रास आ गया है | वह अपनी बड़ी बेटी की कमाई से अपनी छोटी बेटियों की शादी करना चाहती है ,परन्तु वह अपनी बड़ी बेटी के बारे में नहीं सोचती | वह छोटी बेटियों की शादी की बात को बड़ी बेटी के समक्ष रखते हुए कहती है"-अगले अगहन में दोनों के हाथ पीले हो जाएँ,तो गोपाल की तो कोई बात नहीं...क्या कहती हो ? सुन रही ही ?"[५२]

विवाहित कामकाजी नारी की समस्या :-

वर्तमान युग में विवाहित कामकाजी नारी का नौकरी करना आवश्यक हो गया है | पति के साथ नारी भी आर्थिक सहयोग देकर, आर्थिक अभाव को दूर करने तथा परिवार का स्तर

बढ़ाने का प्रयत्न करती है | लेकिन विवाहित कामकाज नारी पग-पग पर अनुभव करती है कि नौकरी करके उसने दुहरा दायित्त्व ओढ़ लिया है | पुरुष तथा परिवारवालों को नारी का नौकरी करना स्वीकार्य है, पर उसे घर-गृहस्थी के कामों में छूट देना स्वीकार्य नहीं है |

राजी सेठ की 'किस्सा बाबू बृजेश्वरजी का' कहानी की स्त्री नौकरी करती है | उसके पति बृजेश्वरजी को सरकार ने बिना किसी पूर्व सूचना के समय से पहले ही सेवा निवृत्ति दे दी है | वह घर पर रहकर भी अपनी पत्नी को काम में मदद नहीं करते | "वह लेटे रहते हैं, घुन्ने बनकर | वह खूब खीझती है | मन में कमान जैसी तान लेती है पर कुछ भी नहीं कहती |"[५३]

मातृत्व-सुख से वंचित पीड़ित नारी की समस्या:-

हरेक स्त्री माता बनना चाहती है | अगर स्त्री माँ नहीं बन पाती, तो समाज उसका मुँह तक देखना पसंद नहीं करता, भले दोष उसमें हो या न हो |

राजी सेठ की कहानी 'अकारण तो नहीं' की दीपाली इसी समस्या से पीड़ित है | उसके पाँव छह साल के दांपत्य के बावजूद भारी नहीं हो पा रहे,परन्तु दोष दीपाली में नहीं उसके पति सुधाकर में था | दीपाली पर ही टोने टोटके किये जाते हैं;संदेह की सुई उसकी ओर बेझिझक घुमायी जाती है | डॉक्टर स्पष्ट कहता है कि "सुधाकर के कुछ शुक्राणु कमजोर हैं जरुर पर निःसत्व नहीं | डॉक्टर ने कहा था दवा-दारू से ठीक हो जायेंगे | एक साल जितना लग सकता है |"[५४]सुधाकर घर आकर माँ से कहता है कि दोष दीपाली में है | दीपाली की सास तो परंपरित सास है | हर विश्वास की गर्द बहू पर डालकर भी जब फल सामने नहीं आता तो वह

अपने बेटे का दूसरा विवाह करने की बात सोचती है | दीपाली मातृत्व सुख से वंचित है ही,परंतु अपने पति के व्यवहार से वह टूट जाती है | वह अनंत पीडिता का अनुभव करती है |

नारी के दैहिक शोषण की समस्या:-

नारी को बहुत कुछ केवल इसलिए भोगना-सहना पड़ता है,क्योंकि उसके पास एक देह है,जो मादा है,धरती की प्रतीक है और कुल उत्पत्ति का मूलाधार है | नारी देह के कारण नारी को जो असंतोषमूलक दबाव सहने पड़ते है,उनके कारण वह स्वयं को संरक्षणहीन व असुरक्षित तो महसूस करती ही है,साथ ही अपमानित भी |

आज की नारी अधिकतर दैहिक शोषण की समस्या का शिकार होती दिखायी देती है | हमारे समाज में पुरुष की अपेक्षा नारी की स्थिति दयनीय रही है | नर एवं नारी दोनों ही समाज के आवश्यक अंग है | लेकिन पुरुष समाज ने आज तक नारी को बिस्तर की शोभा और अपनी इच्छा की कठपुतली समझा है | आज तक नारी पुरुष से अपमानित और लांछित होती रही है | पद, मर्यादा, अधिकार के आडंबर की रचना करने वाले पुरुषों ने नारी के साथ हमेशा ही छल और विश्वासघात कर उसका शोषण किया है | दैहिक शोषण अविवाहित,विवाहित दोनों ही स्त्रियों का होता हैं | पत्नी की इच्छा के विरुद्ध किया जाने वाला संबंध बलात्कार की कोटि में आता है |"बलात्कार का अर्थ यह है कि हम नारी को व्यक्ति न मानकर केवल सेक्स की पुतली मानते हैं |"[५५]

राजी सेठ की 'अन्धे मोड़ से आगे', 'अनावृत कौन', 'परतें' कहानी में उक्त समस्या का अकंन मिलता है | 'अन्धे मोड़ से आगे' कहानी का बॉस मिश्रा नारी को केवल उपभोग की वस्तु

समझता है | नायिका के ऑफिस जाते ही मिश्रा उसे अपनी पासवाली कुर्सी पर बिठा लेता है और धीरे से अपने हाथ नायिका के कंधों पर रख देता है | कभी-कभी उसके हाथ अधिक स्वत्रंतता लेने लगते थे | नायिका सुरजीत को तलाक देकर जब मिश्रा के साथ शादी करती है तब नायिका अनुभव करती है-"मिश्रा की उसके प्रति चाह तो पहले होटलों, रेस्तराँओं, ऑफिस के कक्षों के अवरोध से सेंकी जाकर एक उद्दाम आवेग में उसके शरीर की हदों से टकराकर चूर-चूर होती थी और उसे सराबोर विस्मृति से भर देती थी, मांसाहारी स्वाद की तृष्णा का निष्प्राण अभ्यास बनकर रह गई है | व्हिस्की के एक पेग की तरह मिश्रा की आदत का एक भाग बन जाने का एहसास उसे जब-तब दंशित करता है |"[५६] नायिका की देह मिश्रा के लिए मानो उसके शारीरिक क्षुधा के शमन का साधन मात्र बन गई थी |

'अनावृत कौन' कहानी का पति पत्नी को तो भोगेच्छा का स्थायी शमनकेंद्र समझता है | पत्नी अपने पति प्रकाश के साथ असुखद काम संबंध जीते जीते तंग आयी हुई है | वह सोचती है, "प्रकाश को वह एक रात जितनी मधुर और अधिकारपूर्ण लगी थी, मुझे उतनी ही असह्य और क्रूर | हाथ प्यार के लिए उठते हों,परंतु स्पर्श इतने फ़ौलादी-इस्पाती कि स्वामित्व भोग का हिंसक अहसास ही दे पाते हों |"[५७]

'परतें' कहानी की अज्ञात यौवना तिन्नी पर कई आँखे झपटती हैं | कई हाथ सक्रिय होने की मन भावन कल्पना करते हैं-दिलावर जैसे रक्षक पुलिसकर्मी भी | रामरिख तो दिलावर के मुख से तिन्नी के अंग-प्रत्यंग की वासनात्मक समीक्षा सुनकर हिंसक हो उठता है और तिन्नी पर बलात्कार करता है, "उसका

एक हाथ अपने सीने पर बंधा था | दूसरा पैरों में अटक-अटक जाती स्कर्ट की निचाई को झटकार फटकार रहा था | वह बार-बार पीछे मुड़-मुड़ कर देख रही थी और दौड़ रही थी....नंगे पैर हाँफती हुई....बेतहाशा |"[५८]

विधवा नारी की समस्या :-

विधवा नारी भी एक सामान्य नारी होती है,जिसके पास सामान्य नारी की तरह मन और तन होता है और उसकी कई इच्छाएँ होती हैं, इसके बारे में रूढ़ीग्रस्त समाज कभी सोचता ही नहीं | राजी सेठ के 'तत-सम' उपन्यास में विधवा स्त्री के मन:स्थिती का चित्रण है | विधवा नारी बाहर से जितनी संयमित संतुलित होती है उतनी ही भीतर से कुंठाग्रस्त होती है | विधवा स्त्री के साथ शादी करने के लिए पुरुष तैयार होता है;परंतु वह उसे सामान्य स्त्री के रूप में नहीं देखता | विधवा नारी को एक सुलभ परंतु निम्न वस्तु मान लिया जाता है | कोई भी उससे प्रस्ताव कर सकता है,किसी भी आयु में किसी भी स्थिति में | 'तत-सम' उपन्यास की वसुधा का आक्रोश ऐसी रुग्ण विषम परंपरा व ऐसे लोगों के प्रति अत्यंत कटुता से अभिव्यक्त करवाया गया है |

विधवा स्त्री समाज ने बनाये रीतिरिवाजों का शिकार बनती दिखायी देती है जो उसे विवाह की मान्यता नहीं देता और विधवा का पुनर्विवाह होता भी है,तो समाज उसे सामान्य स्त्री की तरह स्वीकार नहीं करता | अत:विधवा स्त्री तो इन दोनों स्थितियों में कुण्ठाजन्य जीवन व्यतीत करती हुई नजर आती है | 'तत-सम' उपन्यास के नायिका की स्थिति कुछ ऐसी ही है-"नाम अलग अलग है लोग वही-के-वही | एक आये थे उन्हें बच्चों की माँ चाहिए थी | दूसरे को तगड़े वेतनवाली कमाऊ औरत | उन्हीं में से किसी एक

को निवृत्ति के बाद समयकाटू मूरत की जरूरत थी,और किसी एक को अपनी देह की चुप्पी को आजमा लेने की हौंस ।"[५९]

परित्यक्ता नारी की समस्या :-

'परित्यक्ता' मूल संस्कृत का शब्द है, जिसका अर्थ है - "त्यागी या छोड़ी हुई ।"[६०]विवाह के पश्चात् जब पति अपनी पत्नी का त्याग करता है, तब पति द्वारा त्यागी स्त्री परित्यक्ता कही जाती है | परित्यक्ता नारी का जीवन स्वयं एक समस्या है | इन नारियों को दो स्तरों पर संघर्ष करना पड़ता है, एक तो निजी पीड़ा से और दूसरी ओर समाज से | भारतीय परिवेश में परित्यक्ताओं के जीवन की त्रासदी यह है कि भारतीय समाज व्यवस्था में पत्नी के होते हुए पुरुष अन्य कितनी ही स्त्रियों से संबंध रख सकता है अथवा विवाह भी कर सकता है किन्तु परित्यक्ता नारी ऐसा नहीं कर सकती |

राजी सेठ की 'दूसरी ओर से' कहानी में परित्यक्ता नारी की समस्या का अंकन है | 'दूसरी ओर से' कहानी की कल्याणी का पति उसे छोड़ कर चला गया है | कल्याणी अपने भाई के मित्र रमण से प्यार करती है किन्तु वह उसे शादी नहीं कर सकती क्योंकि समाज के रीतिरिवाज उसके आड़े आ रहे है | कल्याणी की बेटी जब अपनी मौसी को पूछती है कि उसकी माँ ने रमणकाका से शादी क्यों नहीं की ? उसे किसी के आड की जरूरत क्यों ? तभी उसकी मौसी कहती है-"तुम्हारी माँ को अपने लिए अपने कारण जीने की चाह को आज तक कभी कोई अर्थ नहीं मिला....न अपने से न औरों से...जानना चाहती है क्यों... क्योंकि हर किसी ने उसी को पूजा है, हर किसी ने उसे ही सम्मान दिया है जिसने अपने आपको मार दिया है पूरी तरह ।"[६१]

प्रेम में धोखा खाए नारी की समस्या :-

आधुनिक युग में नारी का कार्यक्षेत्र बढ़ गया है | शिक्षा तथा कामकाज के कारण उसे घर से बाहर निकलने के लिए अवसर प्राप्त हो चुके हैं | परिणामतः स्त्री-पुरुष परस्पर परिचय भी बढ़ने लगे हैं | इसी परिचय के परिणाम स्वरूप विषम लिंगियों का परस्पर आकर्षण भी स्वाभाविक है | यही आकर्षण प्रेम संबंध में परिणत हो जाता है | परंतु हमारे समाज में खेद जनक बाद यह है कि प्रेमी युग्म का प्रेम शारीरिक आकर्षण में उलझ जाता है | वे काम को ही प्रेम समझते है | अत: ऐसा प्रेम स्थायी जड़-पकड़ नहीं पाता | इसमें ठगने-ठगाने की मात्रा ज़्यादा रहती है और इसमें युवतियाँ ही ज़्यादा धोखा खाती है | इस संबंध में डॉ.गणेश दास का कथन है-"नारी जिसे सर्वस्व मानकर प्रेम करती है, वही उसे धोखा दे जाता है | यह नारी के लिए सबसे बड़ी यातना रही है |"[६२] ऐसी युवतियों की समस्याएँ यद्यपि वैयक्तिक स्तर की हैं, पर वे बराबर सामाजिक ढाँचे को भी ढुलमुल कर रही हैं |

राजी सेठ की 'सहकर्मी' कहानी की नायिका इसी समस्या से त्रस्त है | नायिका मुस्लिम युवक से प्रेम करती थी | वह शादी के पहले ही उस मुस्लिम युवक के बच्चे की माँ बनने वाली थी | नायिका जब यह सच्चाई अपने प्रेमी के सामने रखती है, तो वह इस बात से मुकर कर उसे धोखा देकर चला जाता है | नायिका इस स्थिति के बारे में कहती है-"हम लोग दस दिन के लिए हिस्ट्री ट्रीप पर देहली आये थे.....| पर मेरा सच उसका सच नहीं था | वह मुकर गया....मुझे कठिनाई में देखकर तो भाग निकला | वह साथ होता तो मुझे एक ही बाधा काटने थी-धर्म की-सिर्फ धर्म की | बहुत छोटी थी, थोड़े से साहस से काटी जा सकती थी | पर वह ही साथ

नहीं तो किस हक के लिए लड़ना ? उस हालात में कोई भी हक़ माँगना अपना नंगापन ढँकने की बेशर्मी में पड़ना होता....|"[६३]

प्रेम में धोखा खाने के कारण नायिका को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है | समाज के डर से वह बच्चे की सच्चाई अपने माता-पिता से भी छुपाती है | वह अपने बच्चे को बोर्डिंग में रखती है | जहाँ बिमारी की वजह से बच्चे की मृत्यु हो जाती है |

निजी व्यक्तित्व की चाह : तनावग्रस्त नारी :-

कामकाजी नारी स्वतंत्र्य व्यक्ति की चाह रखती है; परंतु कई बार पति,परिवार वालों या पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण वह अपने स्वतंत्र्य व्यक्तित्व का विकास कर नहीं पाती | परिणाम स्वरूप मानसिक घुटन का शिकार होती है | राजी सेठ की 'अपने विरुद्ध' और 'गलत होता पंचतंत्र' की नायिका इसी समस्या से त्रस्त है | 'अपने विरुद्ध' कहानी की नायिका का लेखिका बनने का सपना पति के कारण अधूरा रह जाता है | पति को अपनी पत्नी का बँट जाना स्वीकार्य नहीं है | नायिका को अपना अस्तित्व आँखों के सामने बिखरता नजर आता है | उसे लगता है जैसे, "चाहे उपेक्षित पड़ी धरती के दिन-प्रतिदिन बंजर होते जाने का एहसास सुबह-शाम मेरे बन्द दरवाज़े पर सिर पटकता बिसूरता है |"[६४]

'गलत होता पंचतंत्र' की नायिका भी पारिवारिक जिम्मेदारी और मातृत्व के कारण अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति नहीं कर पाती | इसी वजह से वह हर समय तनाव में रहती है | नायिका जब मातृत्व के लिए बाध्य हो जाती है, तब पति से कहती भी है, "आई डोंट वांट इट | मुझे अभी कितना-कुछ करना है |"[६५] वह मातृत्व के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं थी, परंतु मातृत्व टाला नहीं जा

सकता था | पारिवारिक जिम्मेदारी और मातृत्व के कारण वह अपने भीतर उमगती कला को साधना नहीं दे पाती | अपने भविष्य को आँखों के सामने चौपट होते देखती है |

अलगाव की समस्या :-

'अलगाव'शब्द का तात्पर्य है, 'अलग होने की दशा, क्रिया या भाव |' सामान्य व्यवहार में 'अलगाव' शब्द का अर्थ वह क्रिया, क्रिया परिणाम या स्थिति विशेष है, जिसमें व्यक्ति स्वयं को सम्बन्ध हीनता की स्थिति में पाकर एक बेगानेपन या अजनबीपन का अनुभव करता है | अलगाव की इस अनुभूति में वह बाहय समाज व्यवस्था या सामाजिक संबंधों से अथवा निज व्यक्तिगत या अंत:विचार शक्ति से कट जाता है |

एरिकजोसेफ्सन के मतानुसार:-"अलगाव स्वयं से, दूसरे से अथवा सम्पूर्ण विश्व से विघटन की दशा में एक वैयक्तिक स्थिति या भावना है |"[६६] अलगाव की भावना मनुष्य जीवन में तनाव एवं विछिन्नता की मानसिकता को जन्म देती है | इसमें मनुष्य दोहरे रूप में व्यवहार करता है | "अलगाव की प्रतिक्रिया अस्तित्वमय की चेतना विभिन्न भावरूपों को जन्म देती है | संसर्ग और अर्जित आदतें उसके आंतरिक और बाहयरूप में परस्पर तनाव और वैषम्य को व्यक्त करती है | स्थापित मान्यताओं और सामाजिक रीतिरिवाजों के कारण व्यक्ति दूसरों के समक्ष एक तरह का आचरण करता है और वैयक्तिक धरातल पर अपनी स्वयं की चेतना के अनुरूप दूसरी तरह से सोचता है और व्यवहार करता है |"[६७]

वर्तमान युग में 'अलगाव' की समस्या आधुनिक संस्कृति की देन है | आज का स्पर्धात्मक युग तथा मनुष्यों के पारस्पारिक

अविश्वासों के बीच पलते रिश्ते इन स्थितियों में मनुष्य को स्वयं कटा हुआ, अजनबी महसूस करना स्वाभाविक है, जो उसकी विवशता भी कही जा सकती है | 'अलगाव' की भावना मनुष्य में कभी कभी अवसाद की स्थितियाँ भी पैदा करती है |"कभी हमें आसपास की जिंदगी से वितृष्णा होती है,शिकायत होती है,घुटन होती है, असंतुष्टि होती है और अलगाव की अनुभूति होती है और कभी उसका उलटा भी होता है |"[६८]

राजी सेठ की कहानियों में अलगाव की समस्या का अंकन बड़ी मात्रा में दृष्टिगोचर होता है | उक्त समस्या को विभिन्न उपशीर्षकों के माध्यम से प्रस्तुत किया है |

पूर्वप्रेमसंबंधों से उत्पन्न अलगाव :-

राजी सेठ की 'अस्तित्व से बड़ा' और 'सदियों से' इन कहानियो में पूर्वप्रेम संबंधों से उत्पन्न अलगाव दिखायी देता है | 'अस्तित्व से बड़ा' कहानी की रीनू की शादी उसके मनपसंद लड़के सुमंत के साथ हुई है | परंतु रीनू अपने पूर्वप्रेमी की अठखेलियों से इतनी पराभूत है कि वर्तमान में पाया मनपसंद पति सुमंत उसे अलग लगने लगता है | सुमंत के साथ रहकर पहले दिन से पलते आये उस कातर कंपन से उसे आज तक मुक्ति नहीं मिली | उसका अस्तित्व उन दोनों के बीच चाहे-अनचाहे धरना देकर बैठ जाता है | सुमंत कहता है-"यह तुम्हें अचानक क्या हो जाता है ! तुम्हारे हाथ-पैर क्यों ढीले पड़ जाते है ?"[६९]

'सदियों से' कहानी की मिन्नी हेमंत से अपने संबंधों की अटूट सुदृढ़ता से इतनी आबद्ध है कि पति नरेन से स्वयं को अलग महसूसने लगती है | तीन वर्षों के वैवाहिक जीवन में वह यह जाना चुकी है कि "नरेन हेमंत नहीं हो सकता | कोई भी एक कोई दूसरा

नहीं हो सकता | एक में दूसरे की अभीप्सा मन को रंक बना देती है | एक का उपजाया सुख-दुख दूसरे के लिए बेमानी है | जीने को छूने के लिए एकरस एकतार हो जाना पड़ता है, तब कहीं छोटा-बड़ा कुछ सधता है | नरेन को साधना, एक सरल सी दिखती ऊंचाई को साध,हेमंत का सान्निध्य एक अविरल प्यास......इन दोनों के आधारों में कोई रिश्ता नहीं......|"[७०]

रुग्णता से उत्पन्न अलगाव :-

राजी सेठ की 'उसका आकाश', 'एक बड़ी घटना', 'खेल', 'उन दोनों के बीच' कहानियों में रुग्णता से उत्पन्न अलगाव दिखाई देता है | रोग में व्यक्ति की संवेदनशीलता और अपेक्षाएँ बढ़ जाती हैं तो दूसरी ओर आज के यांत्रिक युग में सेवा सुश्रूषा करने वालों की दृष्टि भी बदलने लगी है |

'उसका आकाश' कहानी का वृद्ध पक्षाघात का रोगी है | वह अपने बहू के तिरस्कारपूर्ण व्यवहार के कारण अलगाव अनुभव करता है और अपनी दिवंगत पत्नी की स्मृतियों में तिरोहित है-"वह होती तो उसे रोज़-रोज़ बड़ी बहू का सामना न करना पड़ता | रोज़ एक अनाम-से तिरस्कार की पैनी अनी से छिदना न होता |"[७१]

'एक बड़ी घटना' कहानी की अम्माजी लाजो को लकवा मार गया है | उसके प्राण मुँह तक आते है | अम्माजी का पति चाहता है कि उसकी खाट अपनी पत्नी की खाट के पास डलवा दी जाए | परंतु बहूएँ उनका उपहास करती हैं और अलगाव की स्थिती उत्पन्न होती है | बहूएँ खाट डलवाने की अनुमति नहीं देती-"नहीं पिताजी आप अपने कमरे में आराम से सोइए |"[७२]

'खेल' कहानी का नायक ओम भी बिमारी से पीड़ित है | उसका लेखक मित्र उसके लिए अलगाव का कारण है | 'उन दोनों

के बीच' कहानी की पत्नी एक स्वस्थ कायारूप पति के अभाव में अलगाव झेल रही है |

क्रोध से उत्पन्न अलगाव :-

राजी सेठ की 'अनावृत कौन' कहानी का पति प्रकाश स्वार्थी वृत्ति का पुरुष है | पत्नी में पति तथा उसके स्वार्थमंडित व्यवहार के प्रति क्रोध भावना क्रियाशील रहती है | वह प्रकट में उसका विरोध नहीं कर पाती परंतु भीतर अलगाव महसूसने लगी है-"इस स्पर्श को वह अधिकार की तरह भोगता रहा-लगभग इकतरफ़ा | ऐसे अधिकार भोग को मात्र सहना ही होता है | वहाँ से कुछ लौटकर नहीं आता,अपने पास से जाता ही जाता है | प्रकाश को वह रात जितनी मधुर और अधिकारपूर्ण लगी थी, मुझे उतनी ही असह्य और क्रूर |"[७३]

'उसी जंगल में' कहानी की पत्नी अपने पति पर क्रोधित है क्योंकि वह उसे प्रतिदिन अपमानित करता है | पति की अशिष्टाओं से क्रोधित हो कर वह अपने स्वाभिमान से समझौता न करते हुए गर्भावस्था में ही घर छोड़ देती है |'अभी तो' कहानी में पत्नी अपनी वैचारिकता के विरुद्ध पति के व्यवहार को पाकर क्रोधित है | उसका मन पति के प्रति खटास से भर जाता है जो बच्चे की शिक्षा के संदर्भ में झूठे दिखावों व आडंबरों के मोह का संवरण नहीं कर पा रहा, "अब तो मन में खटास पड़ी है | न दूध-दूध है,न दही-दही | बिथरी-बिथरी-सी मानसिकता है | विमल से लड़ाई एक बात है | अपने आपसे दूसरी | दोनों ही छोर उसके मन में प्रज्वलित हैं | जो कुछ उसके चारों ओर फैला है वह भी उसी की शिकार है, अपनी निष्ठा, सदाशयता के बावजूद |"[७४]

'बुत' कहानी का नायक अपनी बेटी और पत्नी को घर में कैदियों की तरह बन्द करके चला जाता है | उन दोनों में नायक के व्यवहार के प्रति क्रोध है-"सोनिया में कोई तत्परता दिखाई नहीं दी | पाँच-सात मिनट ऐसे ही बैठे रहने के बाद लड़की में कुछ हरकत आयी |"[७५] ऐसी स्थिति नायक की पत्नी की है, "लगा वह इस बात पर हँसेगी पर वह हँसी नहीं | वैसी ही निर्भाव बैठी रहीं | उन्होंने और दुगुने उत्साह से बात की पींग बढ़ायी पर मन ने उनकी दिखायी दिशाओं में जाने से इनकार किया | लगा इस कमरे में जमी बैठी किसी ख़ामोश उपस्थिति का बोझ पड़ रहा है |"[७६]

'पुतले' कहानी की नायिका अपने पति से अलगाव महसूस करने लगती है | नायिका रक्षा कोष में पैसे भेज कर जवानों की मदत करना चाहती है | इसलिए वह अपने पति से रुपयों की माँग करती है | किन्तु नायिका का पति पैसे देने से इनकार कर देता है | इतना ही नहीं दूसरे दिन वह सभी चेक्सबुक लेकर ऑफिस चला जाता है | नायिका क्रोधित हो जाती है | वह सोचती है-"जिद करेगी तो पैसे जरुर मिलेंगे किन्तु आपसी विश्वास के परिवृत्त पर पड़ती रोशनी कौन से कोने से धूमिल होने जा रही है | यह धुआँस,अगर फ़ैली, तो जीवन के कौन-कौन से हिस्से को ले बैठेगी | तब वे आवाज से भरे पुतले भर रह जाएंगे और.....और कौन जाने.....|"[७७]

स्वप्रतिष्ठाजनित अलगाव :-

राजी सेठ की 'एक यात्रांत', 'अपने विरुद्ध','किसके पक्ष में', 'अकारण तो नहीं' में उपर्युक्त अलगाव की समस्या दिखायी देती है |

'एक यात्रांत' कहानी में ऊँचे पद की लालसा एक हवस बन जाती है | पुरुष की यह ललक पत्नी की भावनाओं को विषाक्त

बना डालती है और वह स्वयं को अटपटी अवस्था में पाती है-“कहाँ तो इतने कमज़ोर रहे हो तुम कि छोटी-मोटी तकलीफों, व्यंग्यों और कथनों तक की तिलमिलाहट की चोट को लेकर कई-कई दिन खाट पर पड़-पड़ गये हो और आसपास हर किसी को तुमने, तुम्हें आहत कर देने के अपराधी-भाव में पूरा डूबो दिया और अपनी शर्तों पर इसका पूरा हरजाना चाहा है | पूरी क्षमा प्रदान करने के लिए दूसरों को दीनता की पराकाष्ठा तक खींच लाना, तुम्हें कितना प्रिय रहा है......”[७८]

‘अपने विरुद्ध’ कहानी की नायिका रूचि के लेखन की प्रवृत्ति में उसके पति श्याम के कारण बाधा उपस्थित होती है | अपनी लेखनधारा को अवरुद्ध कर देने के कारण नायिका श्याम से दूरी अनुभव करने लगती है | वह कहती है- “चाहता तो वह था कि मैं पूरी की पूरी उसे सौंपी जाऊँ, परंतु सम्पूर्ण पाने के लिए मेरा सम्पूर्ण स्वीकार करना होगा, यह क्या उसे नहीं मालूम !”[७९]

‘किसके पक्ष में’ कहानी की बेला किसी प्रतिष्ठित, आधुनिक विचारों वाले व्यक्ति की पत्नी होना चाहती है और इसी विचित्र चाह ने उसे अपने सीधे सादे पति विक्की और बच्ची से अलग कर दिया है | “वह असंपृक्त रही | मैंने सोचा था कि वह विक्की के बारे में भी पूछेगी परंतु उसने कुछ भी न पूछा |”[८०]

‘अकारण तो नहीं’ कहानी में सुधाकर से अपने शुक्राणु कमज़ोर होने के कारण कोई संतान नहीं हो रही परंतु वह स्वप्रतिष्ठार्थ सारा दोष दीपाली पर डाल देता है | परिणाम स्वरूप दीपाली पति से अलगाव अनुभव करती है-“ठेठ पुरुषीय युक्ति | स्थूल के तंबू के नीचे हर तंतु की कराह को पीस देने की | दिपाली ने खिंचकर आने से इनकार कर दिया |”[८१]

इतर संबंधों से उत्पन्न अलगाव :-

'अन्धे मोड़ से आगे' कहानी की नायिका अपने पति सुरजीत के अत्याचार से तंग आकर बॉस मिश्रा के साथ संबंध बनाती है | वह अपने पति के घर की खुरदरी शय्या त्याग कर मिश्रा के चकाचौंध वाले रंगमहल में पहुँचती है तो उसे अनुभव होता है कि आभिजात्य का अर्थ कुछ और ही होता है | उसे याद आता है कि वह सुरजीत, जो दिन में भी सुरजीत होता था और रात में भी सुरजीत था | उसे अनुभव होता है कि उसका बॉस उसे शह न देता तो वह कभी भी सुरजीत से दूर नहीं जाती | मिश्रा के अंश को अपने पेट में पलते देख वह मिश्रा से अलगाव अनुभव करती है |

'अपने दायरे' कहानी में पति-पत्नी के बीच अलगाव का मुख्य कारण इतर संबंध हैं | कहानी की पत्नी डायरी में लिखती है कि उसके पति को उसके गौतम के साथ हुए इतर संबंधों का जो अहसास है वह कितना असत्य है | "गौतम तुम्हारे लिए एक व्यक्ति हो सकता है-एक तीसरा व्यक्ति, परंतु मेरे लिए वह एक एक्सटेंशन है | विस्तार है व्यक्तित्व का | मेरे अंतर्मन को समझ कर वह अपने आप अनजाने मुझ तक पहुँच जाता है....| शरीर नहीं दिया उसे, यह मात्र तुम्हारे संतोष के लिए कहती हूँ | दे सकती तो शायद संपूर्णता और समग्रता में जी सकती | इस अधूरे जीने से मुक्ति मिलती |"[८२]

राजी सेठ के 'निष्कवच के प्रथम वृत्तांत' में बासू को लेकर घर में अलगाव उपस्थित हो रहा है,"मैं जानता था | बस मैं ही जानता था | चूँकि मैं ही जानना चाहता था | ऊपर-ऊपर सब शांत है | भीतर सब अलग-अलग अशांत है | माँ खाना बनाती है पर

चौकसी करती रहती है | वह खाट पर पसरी रहती है पर राह देखती रहती है | मैं किताब सामने रख लेता हूँ पर कुढ़ता सूँघता रहता हूँ | एक वह ही होगा जो निश्शंक निवृत्त होगा | दुविधाएँ उसे नहीं डसतीं | उसके सुख-चैन को घायल नहीं करतीं | पर कम से कम उसे सोचना तो चाहिए | इस घर के हित को ध्यान में रखना तो चाहिए था......”[८३]

‘निष्कवच’ उपन्यास के ‘वृत्तांत दो’ का नायक विदेशिनी मार्था के कारण माँ से अलगाव पाता है तो दूसरी ओर विदेश में उस निर्मोहिनी मार्था के व्यवहार से स्वयं को निष्कवच अनुभव करता है | फोटो के प्रसंग में इसलिए नायक की माँ कह उठती है- “म्ममुझे ? मुझे भेजेगा ? बता नहीं चुकी मैं ? मुझे करनी क्या है तुम्हारी फोटो ?”[८४]

संबंधों की अस्वस्थता के कारण अपने अलगाव की ओर ‘तत-सम’ उपन्यास में भी संकेत दिया गया है, “मालूम है क्यों हर समय भटकते फिरते हैं हम लोग | घर में चैन मिले तब न.....बैठते ही चखचख शुरू हो जाती है | दूसरों के घर उतना वक्त चैन से तो गुज़र जाता है....कौन हर समय एक-दूसरे के मुँह लगे |”[८५]

आशाभंगनित अलगाव :-

राजी सेठ की ‘किसका इतिहास’, ‘तीसरी हथेली’, ‘मैं तो जन्मा ही’ कहानियों में जो पात्र है वह अपनी आशा भंग होने के कारण अलगाव अनुभव करते हैं |

‘किसका इतिहास’ कहानी में नायिका का भाई शमीम नामक युवती से प्यार करता है | उसे आशा है कि उसके प्रेम मार्ग में किसी भी प्रकार की रुकावट नहीं आयेगी परंतु नायिका के पिता सांप्रदायिक भिन्नता के कारण क्रोधित है | विभाजन के समय उन

पर जो अत्याचार हुए थे उन सारे अत्याचारों का दोष शमीम के संप्रदाय को देकर पुत्र को इस मार्ग से हटाना चाहता है परंतु पुत्र स्पष्ट कहलवा देता है, "मेरा फ़ैसला यदि घर का फ़ैसला नहीं हो सकता तो यह मेरा घर नहीं है | मुझे ऐसा करने का अफ़सोस, पर....."[८६]

'तीसरी हथेली' कहानी की नंदिता रमण नामक विवाहित पुरुष से प्रेम करती है; परंतु नंदिता को लगता है कि रमण में अपनी पत्नी से अलग हटकर स्वतंत्र्य निर्णय लेने का सामर्थ्य नहीं है | वह प्रेमिका और पत्नी दोनों ही संबंधों को बचाना चाहता है | नंदिता धीरे धीरे समझ जाती है और रमण को कहती है, "वहाँ क्या बदलने वाला है...या कहीं भी,कुछ भी क्यों बदलेगा...? बदलने के लिए हिम्मत चाहिए जो मैं तुममे पैदा नहीं कर सकती |"[८७]

'ढलान पर' कहानी की चारु को सामान्य पत्नी की तरह अपने पति से प्रेम,अपनत्व दुलार की आशा थी जो पति के व्यावसायिक व महत्त्वाकांक्षी स्वभाव के कारण दिन दिन भंग हो रही है | परिणामत: चारु स्वयं को अलग करने की सोचते हुए नैली की ओर उन्मुख होने लगती है | 'मैं तो जन्मा ही' कहानी में नायक अपनी प्रेमिका के पास न हो सकने की स्थिति में अन्य सभी मित्रों के बीच अलगाव अनुभव कर रहा है, "लगा, थक रहा है बेकार के हँसने से | हँसने का प्रसंग क्या है यह भी समझ में नहीं आ रहा | लहर तो मन की होती है, किसी खास दिन की नहीं | और इस लहर को निगल जानेवाली कितनी ही बातें हैं जो दिमाग के तापमान को तय करती हैं | वह चाहे भी तो इन सबके उपजाये विनोद में हिस्सा नहीं ले सकता |"[८८]

अंतर्द्वंद्व की समस्या :-

मनुष्य का जीवन संघर्ष अर्थात अंतर्द्वंद्वो से भरा हुआ है | मनुष्य अपने दैनिक जीवन में अनेक समय द्वंद्वो का अनुभव करता है | जब मनुष्य के सामने एक साथ दो अभिप्रेरणायें या ध्येय हो और इन दोनों में से किसी एक को पसंद करना हो तब व्यक्ति अंतर्द्वंद्व का अनुभव करता है | इसी अंतर्द्वंद्व के कारण मनुष्य तनावपूर्ण जीवन जीता है | जब कोई भी प्रबल अभिप्रेरणा दूसरी प्रबल अभिप्रेरणा के साथ या अन्य अनिवार्य परिस्थिति के साथ टकराती है,तब जो मानसिक अवस्था होती है,उसे अंतर्द्वंद्व कहते है | लेविन के अनुसार "अंतर्द्वंद्व व्यक्ति की वह अवस्था है,जिसमें विरोधी और समान शक्तिवाली प्रेरणायें एक ही समय में कार्यरत होती है |"[८९] अंतर्द्वंद्व से कुण्ठा उत्पन्न होने की संभावना अधिक होती है | अंतर्द्वंद्व में व्यक्ति कभी तो एक प्रेरणा से संबंधित प्रत्युत्तर को चुनता है तो कभी दूसरी प्रेरणा से संबंधित प्रत्युत्तर को चुनता है | कभी-कभी तो होता यह है कि वह दोनों प्रेरणाओं से संबंधित किसी भी प्रत्युत्तर को नहीं चुनता |

अंतर्द्वंद्व चेतन तथा अचेतन दोनों ही स्तरों पर हो सकता है, परंतु अधिकांश चेतना स्तर ही होता है | चेतन मन में होने वाले अंतर्द्वंद्व का हल आसानी से मिल जाता है,परंतु कई अचेतन मन से संबंधित अंतर्द्वंद्व होते हैं,जिनका हल ढूँढना मुश्किल होता है | जो व्यक्ति अंतर्द्वंद्व अनुभव करता है,वह कभी कभी अपना संवेदनात्मक संतुलन गुमा बैठता है ,जिस कारण उसके मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है | वह अनिर्णय की मानसिक अवस्था का अनुभव करता है |

राजी सेठ की कहानियों और उपन्यास में उक्त समस्या का चित्रण मिलता है | 'समांतर चलते हुए' कहानी के नायक को पत्नी

की मृत्यु के बाद दूसरा विवाह करने को कहा जाता है | नायक के पास मंजुला के रूप में विकल्प भी है | परंतु नायक अपने पुत्र मिलिंद की स्थिति को गहरे से अनुभव करता है और दुविधा में पड़ता है, "हर किसी का एक ही सुझाव कि मैं गृहस्थी बसा डालूँ,विवाह कर डालूँ-परन्तु मैं अपने अतल में पिघलती दुविधाओं का कभी समाधान न कर सका |"[९०]

'अस्तित्व से बड़ा' कहानी की रीनू अपने पति के साथ जब दैहिक संबंध स्थापित करना चाहती है,तब उसके हाथ पैर अचानक ढीले पड़ जाते हैं और वह किसी को अपनी दुविधा समझा नहीं पाती, "मैं उसे समझाना चाहती हूँ कि मेरी बाँहे पहले से किसी घेरे में अवश पड़ी हैं और मेरे होंठ एक दबाव में कैद.....एक उष्णता मेरे सीने से सटकर पिघल रही है.....और मेरी शिराओं में घुलती जा रही है.....मैं अचानक बेसुध-अवश होती जा रही हूँ |.....पर नहीं समझा पाती |"[९१]

'अपने विरुद्ध' कहानी की नायिका को लेखन के प्रति चाह होते हुए भी उसका पति उसे उसकी ओर प्रवृत्त नहीं होने देता | विरेचन न हो सकने के कारण पत्नी द्वंद्वग्रस्त हो जाती है ,खासकर तब जब पति कहता है,"किसी भी चीज़ को तुमसे ज़्यादा प्यार नहीं करना चाहता, और किसी को तुम मुझसे अधिक करो, सह नहीं सकता |"[९२]

'किसके पक्ष में' कहानी का जयंत भी द्वंद्व में है | विक्की और बेला के झगड़े को लेकर वह कश्मकश में फँस जाता है, "मैं एक अजीब सी पशोपेश में फँस गया | मैं समझाऊँ ? किसे समझाऊँ ? विक्की को ? बेला को ?...किसे किसके पक्ष में हथियार डाल देने के लिए कहूँ ? क्या समझाऊँ ? यह कि अपने बीच दहकते हर

सवाल को वे संस्कार की हथेली से ढाँप लें और फफोलों के दर्द के साथ जी सकने की सहिष्णुता रखें ! या यह कि व्यक्तिगत जीवन दहक रहा हो तो समाज के प्रति किसी अदृश्य निष्ठा के नाम पर वह अपने जीवट को अक्षुण्ण रखें !"[९३]

'गलत होता पंचतंत्र' की नायिका अपने मातृत्व व भविष्य निर्माण के बीच डगमगाती रहती है,"जीवन अपनी झोली फैलाएँ उस मीठी तोतली आवाज़ और आँखों में निश्छल कुँआरी चमक लिये सौंदर्य बिखेरने को तत्पर खड़ा रहा | मेरा बधिर मन उन क्षणों को खोजने में व्यस्त रहा जो सौंदर्य की रचना कर सकें |"[९४]

'अन्धे मोड से आगे' कहानी की नायिका पति सुरजीत और बॉस मिश्रा को लेकर दुविधा में है | वह द्वंद्व को अनुभव करते हुए कहती है-"काश ! यह मुश्किल एक सच्चाई होती | सुरजीत ने उसे मुश्किल से छोड़ा होता और मिश्रा ने उसे मुश्किल से पाया होता तो वह अपने को कहीं तानकर रख सकती | एक निष्ठाहीन आवाहन की पुकार के सम्मुख हथियार डाल देने के लिए व्यक्तित्वहीन अनौचित्य के सम्मुख यों न झुकती-टूटती |"[९५]

'किसका इतिहास' कहानी का अतुल मुस्लिम युवती शमीम से विवाह करना चाहता है, परंतु उसके पिताजी भारत विभाजन में अपने परिवार पर हुए अत्याचारों के इतिहास को याद करके पुत्र का विरोध करते है | पिता और पुत्र के बीच का संघर्ष ही द्वंद्व का कारण बनता है | पिता कहता है-"तू क्या समझायेगी...और वह भी क्यों समझेगा...? आखिर यह मेरा इतिहास है, उसका नहीं | वह मेरे ज़ख्म थे, उसके नहीं...यह दर्द भी मेरा ही है, बस मेरा...इसे मेरे पहलू में खड़ी मेरी हमसफर पीढ़ी ही समझ सकती है, मेरी भावी नहीं...जा ! कह दे उससे..."[९६]

'तीसरी हथेली' की नंदिता विवाहित रमण से प्रेम करती है, परंतु अपने परिवार को न छोडने का निर्णय प्रेमी की स्थिति को विपरीत ध्रुव पर रखे हुए है | दोनों स्थितियाँ अपनी अपनी जगह अटल हैं | "क्यों बार-बार कह देती 'न'....घर भी चाहती हो और.... अपनी ज़िंदगी बिगाड़ने पर पड़ी हो....."[९७]

'योग दीक्षा' कहानी की गरीब लड़की भी उक्त समस्या से ग्रस्त है | गरीब लड़की योग का टयूशन कराती है | सर्वप्रथम वह लिजा बाटलीवाला को योग की शिक्षा देने जाती है | योग की शिक्षा कुछ खाए बिना ही दी जाती है इसलिए गरीब लड़की भूखी ही घर से निकलती है | किन्तु लिजा तो खाकर ही योग की शिक्षा लेती है | लड़की जब लिजा के घर जाती तो उसे कुछ न कुछ खाते हुए देखती | एक तो लड़की के पेट का गड्डा खाली रहता था और ऊपर से लिजा उसे खाने का आग्रह करती तो लड़की दुविधा में फँस जाती-"लिजा ने पूछा,"खाओ......खायेंगी ?"उसने'न'नहीं कहा,परंतु 'हाँ'भी नहीं कहा गया | ट्रॉली से अपनी निगाह हटा कर उसने सामने की दीवार पर टाँग दी, आग्रह के दूसरे क्षण की प्रतीक्षा में लिप्त |"[९८]

'मेरे लिए नहीं' कहानी की नायिका प्रीति बीमार होने के कारण भास्करनराव के घर रहने आती है | भास्करनराव के मन में सोने की समस्या को लेकर द्वंद्व उत्पन्न होता है- "रात बैठ गयी थी सब तरफ | सवाल खड़ा था सामने, छुट्टी की अरजी दे चुके होने से भी विकट, शहर वालों की आलोचना- आशंका से भी पेचीदा कि रात को कहाँ सोया जाये | रोगी के कमरे में-आवश्यकता के तहत या दूसरे कमरे में औपचारिकता के अधीन ऐसा उद्विग्न अनिर्णय |"[९९]

'ढलान पर' कहानी में नायिका चारु की यौन संतुष्टि नहीं हो पाती, कारणवश पति चेतन की उपेक्षा से चारु के जीवन में द्वंद्व उपजता है तब चारु अपनी इस द्वंद्व का समाहार वह एक लंबे संघर्ष के उपरान्त नैली के रूप में खोज लेती है |

'उसी जंगल में 'कहानी की नायिका पति के अत्याचारों से तंग आकर अपने भाई के घर चली आती है | उसी बदचलन पति के कारण उसके मन में द्वंद्व उपजता है | जब नायिका अपनी बच्ची को जन्म देती है, तो उस मांस के लोथड़े को देख उसमें से उसे बदचलन पितृत्व की बू आती है, तब वह सोचती है-"क्यों वह यह सब यहाँ उठाकर लायी.....अपने भीतर धारणा करके.....लगा था, वह किसी जंगल में फंस गयी है जहाँ ऐसे फूल खिलते हैं, जिनका भविष्य कभी अपना नहीं होता, जहाँ कोई किसी को भी आजन्म बंधक रखकर सौदादारी कर सकता है | बिलकुल अपनी छाती से लगे बच्चे के एहसास से भी मन कितना बेगाना हो सकता है, इसे उसने पहली बार जाना | मन अलग पड जाता है,देह अलग ! छाँह टल जाए तो धूप में फलने-फूलनेवाला पौंधा भी नहीं फलता |"[१००]

'उन दोनों के बीच' कहानी की पत्नी पक्षाघात के रोग से पीड़ित अपने पति की सेवा-सुश्रुषा करते हुए यह अनुभव करती है कि वह एक अपने पति की माँ रूपी नर्स बनकर रह गयी है | वह अवसन्न हो जाती है | उसे ब्याह ने छत तो दी थी, परंतु साथी का साथ नहीं दिया | तभी वह द्वंद्वग्रस्त होकर सोचती है-"पर.....अब ?.....इन सब बातों का कोई उत्तर नहीं हो सकता था.....कोई भी नहीं | उनकी अपनी इच्छाओं और अपनी ही मजबूरियों में ऐसी

टक्कर....वह भी उन्हीं के आंगन में....उनकी अपनी चौहददी के भीतर......"[१०१]

'सदियों से' कहानी की मिन्नी भी द्वंद्वात्मक स्थिति में है | एक ओर पूर्व प्रेमी हेमंत तो दूसरी ओर नरेन | वह पति नरेन और प्रेमी हेमंत की वजह से हमेशा द्वंद्व में रहती है | वह अपने प्रेमी के पत्रों को सीने से लगाये रहती है | "उसके मन में बैठ गया है कि उसकी असली मुक्ति इन पत्रों में बंद है | यही वह जिंस है जो उसके हर एकांत को एक अभिमंत्रित पुकार द्वारा अपने घनेरे कोटर में खींच लेती है | वहाँ रहते वह भूल जाती है-"नरेन से विवाह,रजत का जन्म | दूसरे औचित्य | मन व देहरियाँ लाँघता चला जाता है जो उसे नहीं लाँघना चाहिए | चाहिए के चतुर्दिक तनाव के बाबजूद |"[१०२] मिन्नी के दिल में अपने पूर्व-प्रेमी का अस्तित्व आज भी है | वह उसके पत्रों को जलाना चाहती है पर जला नहीं पाती | उन्हें उन्हीं पत्रों में असली मुक्ति दिखायी देती है | परंतु हेमंत से भेजे पत्रों के कारण उसे दांपत्य जीवन के टूटने का डर भी लगता है | उसे लगता है कि वह पकड़ी जायेगी,किसी भी समय | "इसलिए रात आती है तो डर व्यापता है | डर कितना सर्वग्रासी आवेग है | उघड़ने का डर | पकड़े जाने का डर | अधूरे समर्पण का डर | शरीर के शरीर न होने का डर | मन के बेमन होने का डर | जो कुछ हो चुका उससे रिस आने का डर | जो-जो कुछ होना चाहिए वैसा न हो पाने का डर |"[१०३]

'अभी तो' कहानी की वृंदा अपने बेटी की पढ़ई को लेकर द्वंद्वग्रस्त है| वृंदा हिंदी प्रेमी है, तो उसका पति विमल अंग्रेजी प्रेमी | विमल अपने बेटे को अंग्रेजी भाषा में शिक्षा देना चाहता है, तो वृंदा अपने बेटे को हिंदी भाषा में शिक्षा देने के पक्ष में है | वृंदा

अपने बेटे पियु की पढाई को लेकर द्वंद्व में है,"साँप के दर्शन से जैसे कोई स्तब्ध हो जाता हो, ऐसी स्तब्ध लाचार बैठी है वृंदा | पियु को अपने मन के विद्यालय में भेजना चाहती है,नहीं भी चाहती | पियु को अपना विस्तार मानती भी है, नहीं भी मानती | वह अपना भी है,पराया भी |"[१०४]

'दूसरे देशकाल में' की नायिका शुचिता रोहित से प्रेम करती है | रोहित विवाहित है | रोहित का अपनी पत्नी से तलाक का मामला चल रहा है तो दूसरी ओर उसकी प्रेमिका को उससे गर्भ रह जाता है | अब गर्भ को रखने न रखने का द्वंद्व चल निकला | पत्नी पक्ष का यह आरोप कि रोहित के विवाहेत्तर संबंधों ने ही उसे इस मनोदशा तक पहुँचाया है | रोहित ऐसी स्थिति के निर्माण होने पर शुचिता को गर्भपात करने के लिए कहता है | गर्भपात का निर्णय लेकर भी शुचिता का ममत्व द्वंद्वग्रस्त होने लगता है | शुचिता सोचती है-"क्यों हमने किया ऐसा....? रोशनी की कतरन निकाल फेंकी | अपने ही भीतर से | केवल कुछ असुविधाओं के डर से....नरमा जाता सब कुछ धीरे-धीरे ! क्यों झेल नहीं लिया....ऐसा कब तक होता रहेगा कि मन एक तर्क से और देह दूसरे तर्क से धड़का करेगी | मेरे हाथ अनायास अपने ही पेट पर चिपक गये थे | हथेली का गुदगुदा सांत्वनीय स्पर्श पेट के भीतर की दुखन को छू लेने को आकुल | व्याकुल !"[१०५]

'अकारण तो नहीं' कहानी की दीपाली माँ नहीं बन सकती है, किन्तु दोष दीपाली में नहीं उसके पति सुधाकर में है | कहानी की दीपाली पति तथा उसकी सांप्रतिक पुंसत्व अर्ध्दक्षमता के कारण द्वंद्वग्रस्त है | दीपाली का पति सारा दोष दीपाली पर ही डाल देता है | दोष अपने पर आ जाने के कारण दीपाली चेत जाती है और

उसका पति के प्रति सारा प्रेम उसकी भविष्य हीनता के संदर्भ में क्षरित होने लगता है,"ऐसे गणितज्ञ तर्क से दीपाली छिल गयी,यानी कि मैं कोई स्त्री नहीं, नाँद हूँ जिसमें तुम्हारी पुश्तों का चारा धरा रहे | एक निर्जीव-जैसी वस्तु, जो भेजी और लायी जाती रहे जिस हिसाब से जिस किसी को उसकी जरूरत हो |"[१०६]

'निष्कवच' उपन्यास के पहले वृत्तांत का नायक विशाल बासू और नीरा के बीच बढ़ते संबंधों के कारण द्वंद्व में है | उसके भीतर का अभिभावक उसे नीरा के प्रति अतिरिक्त रूप से सतर्क किये रहता है | बासू का फक्कड व्यक्तित्व विशाल के मन में यह भय पैदा करता है कि बासू कहीं बंध कर नहीं रह सकता | बासू के साथ नीरा का आगे बढ़ना उसे ठीक नहीं लगता | इसी कारण वह अंतर्द्वंद्व से जूझता है-"साधारणत: कहीं और उसका लगाव होता तो मैं बासू के पक्ष में होता | अपनी सारी लगामें ढीली करके मैं उसकी बगल में जा खड़ा होता | उसके मन को अपने आँखों में उड़ेलकर देखता...उसके चाहने को चाहता, पर अब...|"[१०७]

'निष्कवच' उपन्यास के वृत्तांत दो का नायक द्वंद्वग्रस्त है | 'वृत्तांत दो' का नायक विदेश में मार्था के साथ रहता है | नायक और मार्था पति-पत्नी नहीं है, पर उन दोनों के बीच दैहिक संबंध स्थापित हो चुके थे | विदेशी धरती पर नायक मार्था की दैहिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन मात्र बनकर रह गया है | मार्था के साथ संबंधों के कृत्रिम व दैहिक व्यावहारिक आवेगों के कारण नायक द्वंद्वग्रस्त हो उठता है,"धक्का जैसा देती है मार्था | नहीं जानती कि वहाँ अगर होता तो कहीं जाता ही क्यों | यह तो कहो,मार्था कभी भीतर तक तन्मय हुई तो जान लेती है, नहीं तो वहाँ देह के आदान-प्रदान से ही काम चल जाता है | तथापि वह

एकाएक कहीं ओर पहुँच जाता है-मन में-कहीं दूर-मार्था से परे, परंतु उसकी देह से चिपका |"[१०८]

'तत-सम' उपन्यास में वसुधा का भाई उसका पुनर्विवाह करना चाहता है | परंतु विधवा वसुधा अपने पति की यादों को भूला नहीं पा रही है | वह पुनर्विवाह के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं है | वह न ही अपने भाई का विरोध पाती है, न ही पुनर्विवाह करना चाहती है | ऐसे में उसे वह द्वंद्वात्मक स्थिति से गुजरना पड़ता है -"क्यों न कह दे कि यह तैयारी उसके भीतर नहीं है...| नहीं है उन सब बातों का स्वागत...| जिंदगी के अगुआनी के नाम पर नहीं | भीतर ठहर गया है सबकुछ | वे क्षण...वे बातें...वे रास्ते...वे चौखटें..... पता नहीं किस बात ने जीवन-सत्व की तरलता को सोख लिया है पूरे का पूरा | मन में बदलाव की न चेष्टा है न इच्छा | पर कुछ कहना नहीं हो पाता, नहीं हो पायेगा | पैर जैसे धरती से चिपका पड़े है |"[१०९]

संत्रास की समस्या :-

'संत्रास' शब्द से अर्थबोध होता है; 'सम-त्रास' भयभीत होना, बहुत अधिक या तीव्र त्रास, आतंक | आंतरिक त्रास का नाम संत्रास | संत्रास निर्माण का कारण मनुष्य की विवशता है | पास्कल के अनुसार-"इस जगत् में जीवन के नाम पर मनुष्य और प्रकृति में जो घात-प्रतिघात चला करता है,उनका फल मूलतः संत्रास ही हुआ करता है | संत्रास का संबंध धर्म और आचार के द्वारा निर्दिष्ट पापों के प्रति भय की भावना के साथ भी है; क्योंकि धर्म बहुत से प्रेयों को पापमूलक मानता है | मनुष्य जब भी प्रेय की प्रियता की ओर आकृष्ट होता है, धर्म भावना उसकी ओर आकृष्ट होने में भय का संचार कर देती है |"[११०]

मृत्यु का आतंक संत्रास का सशक्त उद्दीपन है | मृत्यु के भय से अगर मनुष्य मुक्त होता है,तो वह संत्रास से बच सकता है | हैड्गर के अनुसार-"मूलत:संत्रास मनुष्य की वह आधारभूत अनुभूति है कि मनुष्य इस जगत से संबंधित नहीं है, जिसमें वह है और जगत में व्याकुलावस्था में रहता है | इस अनुभूति से पलायमान के लिए तथा इसका परिहार करने के लिए जब मनुष्य प्रयास करता है,तो संत्रास उसका पीछा करता है | भय से भिन्न,जिसका कोई निश्चित तथा विशिष्ठ कारण होता है, वह संत्रास | संत्रास किसी वस्तु विशेष को स्त्रोत मान कर उससे उत्पन्न नहीं होता अत: कोई दिशा ऐसी नहीं होती जिसमें इसका सम्मुख होने पर किसी को व्याकुलता होती है |"[१११]

राजी सेठ की कहानियों एवं उपन्यास में उक्त समस्या का चित्रण बड़ी मात्रा में व्याप्त है | 'समांतर चलते हुए' कहानी की मंजुला नायक से प्रेम करती है | मंजुला नायक के साथ अपने आप को सुरक्षित महसूस करती है,परंतु उन दोनों ने अपने संयुक्त भविष्य के बारे में कभी सोचा नहीं था | क्योंकि मंजुला के सिर पर पैतृक जिम्मेदारियों का बोझ था | मंजुला को डर है कि पैतृक जिम्मेदारियाँ कहीं उसके प्रेम को निरस्त न कर दें | "वह समझती है, यह बहुत संभव नहीं है उसकी परिस्थितियों में | ऐसे विपन्न समय में वह अपने को अपने परिवार से विलगाकर नहीं आ सकती | पक्षाघात से पीड़ित और वर्षों से घरवालों की सेवा-सुश्रूषा पर आश्रित पिता,युद्ध की भेंट हो गया बड़ा भाई,दो छोटी बहनें;जिनका लिखना-पढ़ना जारी था |"[११२] इन्हीं परिस्थितियों के रहते मंजुला संत्रस्त है |

'अमूर्त कुछ' कहानी में सुम्मि का भाई कप्पी और सुम्मि के संबंधों को लेकर संत्रस्त है | कप्पी सुम्मि के भाई का बचपन का सहपाठी था, जिसने आर्थिक अभाव के रहते पढाई छोड दी थी | सुम्मि के भाई को कप्पी बहुत सालों बाद मिलता है | कप्पी का मित्र के घर आना-जाना लगा रहता है | इसी बीच कप्पी और सुम्मि एक-दूसरे के प्रति आसक्त होते है | सुम्मि का भाई कप्पी के साथ मित्रता तो रखता है, पर सुम्मि के प्रति उसकी रागात्मकता तथा सुम्मि का उसके प्रति जो अनुराग है, उस पर संदेह करता है | इसी कारण उसका संत्रास बढ़ जाता है -"आना उसका ही अधिक होता था, उसकी डयूटी की अनियमित शिफ्टों और मेरे ऑफिस के बँधे समय के कारण | वह आता था तो मेरे भीतर एक अजानी चौकन्नी सतर्कता जाग उठती थी | यह अरक्षा मुझे जिस दिन अधिक त्रास देती थी, मैं उसे उस दिन अधिक प्यार, अधिक मनुहार से चाय पिलाता, सिगरेट पिलाता, असाधारण रूप से घेर कर रखता |"[११३]

'उसका आकाश' में पक्षाघात का रोगी अपनी बीमारी और जीवन पर छाये जा रही मृत्यु की छाया से संत्रस्त है-"उसे लगा कि मुक्ति का रास्ता है इन सब बातों को जान लेना | पर यहाँ तक पँहुचे बिना कोई जानना नहीं चाहता, नहीं जान पाता | सब अलग-अलग अपनी-अपनी सूली चढ़ते हैं | कोई किसी के काम नहीं आता, कोई किसी का गुरु नहीं बनता, कोई किसी के दुःख नहीं बाँटता |.... उसका दिल डूब गया | वह फिर पसीने से तर होने लगा |"[११४]

'अस्तित्व से बड़ा' कहानी की रीनू दांपत्य जीवन तथा पूर्व-प्रेमी की अमूर्त उपस्थिति के कारण संत्रास अनुभव करती है | रीनू

सुमंत से प्यार करती थी, विवाह भी सुमंत से किया था | रीनू सुमंत के साथ दांपत्य जीवन व्यथित कर रही थी | लेकिन उसकी विवशता यह थी कि वह सुमंत के प्रति चाहते हुए भी समर्पित नहीं हो पा रही थी | पूर्व प्रेमी के आलिंगन और चुंबन की घटना उसके दिलो दिमाग पर इस तरह से छायी हुई थी कि वह पति के साथ यौवन के उद्दाम क्षणों में उस घटना को याद करती है, तो उसके हाथ पैर अचानक ढीले पड़ जाते है | पति सुमंत रीनू को पूछता है कि ऐसे उद्दाम क्षणों में तेरे हाथ पैर ढीले क्यों पड़ जाते है ? तब रीनू अपने पति को समझाना चाहती है कि "मेरी बाँहे पहले से किसी घेरे में अवश पड़ी हैं और मेरे होंठ एक दबाव में कैद...एक उष्णता मेरे सीने से सटकर पिघल रही है.....और मेरी शिराओं में घुलती जा रही है.....मैं अचानक बेसुध-अवश होती जा रही हूँ | पर समझा नहीं पाती |"[११५]

'एक यात्रांत' कहानी की पत्नी दांपत्य जीवन में जो खोखलापन है, उस खोखलेपन का संत्रास वह अकेली भोग रही है | पति की अर्थ प्राप्ति और ऊँचे पद की कृत्रिमता से डरती है,पर वह कुछ भी नहीं कर पाती-"जो पिघलन अतल में कहीं उद्वेलित हो रही थी, वह स्याही के तरल धब्बों पर ब्लॉटिंग पेपर के अचानक गिर जाने पर होने वाली क्रिया की तरह एकाएक सुख गयी | कहीं कुछ चुभा तो अवश्य पर मैं मुस्कुराती ही रही | एक सफल कृत्रिम हँसी |"[११६]

'पुनःवही' कहानी में मृत्यु से उपजा संत्रास है | कहानी के नायक देवव्रत का छोटा भाई अपने पिताजी की मृत्यु के कारण संत्रास में है | पिताजी की मृत्यु के कारण देवव्रत का भाई डर-सा गया है | पिता की मौत को वह बड़े भाई की तरह सहज घटना

मानकर प्रकृतिस्थ नहीं हो पाता | पिताजी के शव को बाँधते समय उसको गायत्री मंत्र बोलने को कहा जाता है | देवव्रत उसे समझाता है कि यह अपनी बाबूजी को श्रद्धांजलि है | यह उनके आत्मा की शान्ति के लिए है | उसने छोटे को जोर जोर से उकसाया कि बोल, परंतु छोटे वहीं सहमा सा खड़ा रहा-"छोटे नहीं बोल पाता | घुटती हुई घिग्घी के साथ बाबूजी द्वारा रटाए हुए गायत्री मंत्र के टुकड़े उसके गले में अटके रह जाते हैं | वह फटी-फटी आँखों से देखता है-कभी देवव्रत को, कभी बाबूजी को नए कपड़ों में लिपटी एक वस्तु में परिवर्तित होते |"[११७]

'अपने विरुद्ध' कहानी की नायिका रूचि का लेखन पति के प्रोत्साहन और सहयोग के बिना अवरुद्ध हो चुका है | नायिका का पति श्याम रचनाकारों का बड़ा आदर करता है, पर वह अपनी पत्नी की रचनाधर्मिता को लगातार अनदेखा कर उपेक्षा करता है | रूचि जब उसे कविताओं को छपवाने को कहती है तब वह उसे साफ़ इन्कार कर देता है | श्याम के ऐसे दोहरे व्यक्तित्व के कारण रूचि संत्रस्त है-"पर न जाने कौन-सा हिस्सा हृदयरोग के हमले के बाद मर जानेवाले हृत्कोष्ठ की तरह ठंडा हो गया था कि उन्हें वहाँ तक ले जाने की हिम्मत ही नहीं पड़ती थी | उनके हँसते-खेलते-दुलराते-इठलाते व्यक्तित्व में ऐसे किसी क्षण का कोई स्थान नहीं दिखता था |"[११८]

'किसके पक्ष में' कहानी का विक्की दबंग प्रवृत्ति की पत्नी बेला के व्यवहार के कारण संत्रास अनुभव करता है | बेला को आधुनिक विचारों वाला पति चाहिए था | विक्की में पुश्तों के संस्कार थे | उसके लिए दांपत्य पारस्परिक आदर की वस्तु थी | दबंग प्रवृत्ति की बेला विक्की के ऐसे विचारों से नफरत करती है

और बिना सोचे-समझे गृहस्थी छोड़कर चली जाती है | विक्की को आशा रहती है कि बेला घर वापस जरुर आयेगी किन्तु उसकी यह आस टूट जाती है | इसी कारण विक्की संत्रस्त हो जाता है | विक्की सोचता है कि उसका दोष न होते हुए भी उसको दंड दे दिया गया है-"चारदीवारी के अंदर ही परिक्रमाएँ लेता धुआँ बिखरता गया, उसकी कड़ुवाहट आसपास भी देखी गई | विक्की इन क्षणों का सामना कठिनाई से कर सका | कभी वह अपने दु:ख से दु:खी, कभी आसपास वालों की निगाहों से त्रस्त | उसे लगता था,हर कोई आते-जाते उसे ही देखता है,उसके ही बारे में सोचता है |"[११९]

'अन्धे मोड़ से आगे' कहानी की नायिका सुरजीत और मिश्रा इन दो संबंधों की दैहिक स्थिति से आक्रांत है-"पेट में पलते मिश्रा के अंश का कुलबुलाता अति यथार्थ बंधन है.....सुरजीत की नितांत अपेक्षाविहीन बेआवाज़ तटस्थता की ठंडक है | यहाँ से कोई रास्ता वापस नहीं जाता | यहाँ से कोई रास्ता आगे भी नहीं जाता | आगे.... सामने....उसके भविष्य के कब्रिस्तान की शुरू हो चुकी सीमा है-मिश्रा के अंदर दफन हो चुके कितने अतीतों की तरह बेजान होते जाते उसके भविष्य की |"[१२०] नायिका आगे कोई मार्ग न पाकर भीतर से डर जाती है | अन्धे मोड़ की स्थिति उसका संत्रास बढ़ाये जा रही है |

'अनावृत कौन' कहानी में मृत्यु से और संबंधों के तनाव से उपजा संत्रास है | जवान बेटे के शहीद हो जाने से पिता अपनी वृद्धावस्था के कारण अपने आप को असहाय महसूस करता है | बहू और पोते-पोतियों को सुरक्षित भविष्य का आश्वासन भी नहीं दे सकता है-"संरक्षण का बरगदी आश्वासन उनके भीतर ही कहीं अटककर रह जाता है, जब याद आ जाती-आँखों की उत्तरोत्तर मंद

पड़ती रोशनी और लपककर उठ पाने की असमर्थता | चेहरे पर जमे बूढ़े शैथिल्य के बीच अपनी कच्ची पनीली आँखे छुपाये हुए वह भटका करते इधर-उधर |"[१२१]

'अनावृत कौन' कहानी के पत्नी को अपने पति में निष्करुणता, असहिष्णुता दिखायी देती है | नायिका का पति प्रकाश आत्मकेंद्रित है, जो स्वयं के बारे में सोचता है | प्रकाश पत्नी के कैबरे के बारे में विचार सुनकर और कैबरे में आने पर मना करने पर क्रोधित हो उठता है | वह अपनी पत्नी के साथ बातचीत करना बंद कर देता है | प्रकाश का इस तरह का व्यवहार देखकर नायिका मायके चली जाती है | नायिका मायके जाने पर संत्रास के घिर जाती है | वह सोचती है कि अगर उसका पति लेने न आया तो ?- "उस रात डर लगा कि यदि यह स्थिति यूं ही बनी रही तो...! कल्पना आतंकित करने लगी |"[१२२]

'अपने दायरे' कहानी की पत्नी का जीवन पति के कारण संत्रस्त है | उसने अपने जीवन की व्यथा को डायरी के पन्नों में बंद कर दिया था | वही डायरी के पृष्ठ उसके संत्रास को उजागर कर देते है | वह लिखती है-"यह शरीर और शरीर के सारे दुःख-दर्द तुम्हारे लिए मात्र 'मेडिकल' और 'क्लिनिकल' प्रश्न हैं | पर मेरे लिए....? मेरे लिए चुकते जाना है....क्षण-क्षण कुंठित होना...अपने मरने को तिल-तिल जीना...|"[१२३]

'दूसरी ओर से' कहानी की कल्याणी परित्यक्ता स्त्री है | जो रमण नामक व्यक्ति से प्रेम करती है | कल्याणी की बेटी सुशी जब अपनी माँ और रमणकाका के संबंधों के बारे में जानती है,तो संत्रस्त हो जाती है | उसको डर खाये जा रहा है कि रमण काका उसकी माँ को पुस्तकीय भाषा के माधुर्य द्वारा वश में किये जा रहे

है | “रमण...रमण...रमण... तब मुझे लगा था यह रमण काका नहीं हैं...ममता से दोनों गालों को हाथ में लेकर पुचकारनेवाले | यह रमण हैं रमण...केवल रमण ! माँ को मुखातिब...पुस्तकों की-सी भाषा बोलकर माँ को फुसला लेनेवाले |”[१२४]

‘मेरे लिए नहीं’ कहानी की प्रीति पुरुषों के प्रति मन में पिच्च सी घृणा रखती है | परंतु जो प्रीति पुरुष को घृणा से देखती है, उससे वह साहचर्य और शारीरिक तुष्टी भी चाहती है | प्रीति जिस पुरुष से साहचर्य चाहती है, उसे पति के रूप में अपनाने के लिए इन्कार कर देती है | वह परिवार में पति नामक पदासीन व्यक्ति के शासन दंड से आक्रांत है | उसी संत्रास को वह पूर्व कल्पित करके घर नामक संस्था के विरुद्ध होती जा रही है | वह कहती है-“नहीं,नहीं हो सकते...घर में होते ही स्टैण्ड बदल जाते हैं | राईट्स ड्यूटीज़ बँट जाती हैं | खेमे बन जाते हैं,और यह पत्नियों का खेमा...,मालूम है,इस खेमे में एक ही बात में परफेक्शन चाहिए...अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जी सकने का आर्ट चाहिए | अपने को घुला देना,मिटा देना वहाँ एक खूबी है और मैं ? मैं अपने को भूल नहीं सकती...|”[१२५]

‘खेल’ कहानी का ओम लेखकों की खोजी प्रकृति के बारे में सोचकर संत्रास में है | कई लोग लेखकों से अपनी अंतरंग बातें करने से डरते है क्योंकि उन्हें लगता है कि वह लेखक न जाने उसे अपनी रचना में किस रूप में उतार देंगे | ओम भी अपने लेखक मित्र के समक्ष अपनी बिमारी का उल्लेख कभी नहीं करता | ओम नहीं चाहता कि उसका लेखक मित्र उसकी पीड़ा को लोगों के पढ़ने की चीज़ बना दे | ओम रुग्णावस्था में भी इसी संत्रास में है-“क्योंकि मैं तुम लोगों की मनोवृत्ति खूब जानता हूँ | मैं खुद

लेखक होना चाहता रहा | अभी भी पन्नों-के-पन्ने लिखे हैं मेरे पास…तुम उसे फिर उसी दृष्टि से देखोगे | इंसानी दृष्टि से नहीं,लेखकीय दृष्टि से | सौ और चीज़ों को बीच में रखकर | इंसान की तलाश के लिए इंसान को ही चीर-फाड़ देना |"[१२६]

'ढलान पर'कहानी की चारु अपनी अतृप्त वासना को पूर्ण करने के लिए तड़प रही है | चारु पति से तृप्त नारी नहीं है | चारु अपने पति के व्यवहार से संत्रस्त है | वह आक्रांत होकर कहती है- "उसकी अपनी कोई जरूरत नहीं है क्या |"[१२७]

'यात्रामुक्त' में किशना के पिताजी निरंतर चाकरी से तंग है,शरीर से लाचार है | किशना के पिताजी अपने बेटे केशव के माथे पर चोट देखकर कातर हो जाते है | तभी वह किशना को कहते है कि तू भाग जा | किशना अपने पिता को छोड़कर जाना नहीं चाहता था | वह अपने भीतरी भय को किशना के समक्ष उघाड़ते हुऐ कहते है,- "तू कहता है,तू मुझे छोड़कर जाना नहीं चाहता पर…पर मैं तो तुम्हें छोड़कर जा सकता हूँ…जा सकता हूँ किशना…सच कहता हूँ, मैं जा सकता हूँ, बेखटके…संतोष के साथ…शान्ति के साथ……कपड़ा इधर से काटो या उधर से…क्या फर्क पड़ता है ! दोनों छोर अलग हो जाते हैं | नहीं किशना नहीं…यह मरना नहीं, मुक्ति है |"[१२८]

'उसी जंगल में' कहानी की नायिका का पति अत्याचारी था | उसके अत्याचारों से तंग आकर नायिका ने पति का घर त्याग दिया था, जब भी वह अपने पेट में पलते बच्चे के बारे में सोचती है तो संत्रस्त हो उठती है-"लगाव से अधिक अधिकार की हिंसा से पीस दिये जाना ! उस तरह की सब रातें…सुख से नहीं,दहशत से मन पर चिपकी मिलती हैं | उसने खुद ही मर्माहत होकर कितनी

बार सोचा कि वंश-बेल बढ़ेगी भी तो किसकी····कैसे लोंगो की····|"[१२९]यही नहीं नायिका अपने पति के संपर्क में आयी नयी औरत पर होने वाले अत्याचार की कल्पना करके भयभीत हो उठती है-"कैसे उस निरीह को धकियाया-लतियाया होगा····कैसे-कैसे खूंखार दोस्तों के सामने परोसा होगा····कैसे किसी गयी गुजरी बात पर सीढ़ियों से धक्का दे दिया होगा ?"[१३०]

'स्त्री' कहानी की कमली शहर में आये सिद्ध ज्योतिषी को मिलने जाना चाहती है | पति के मना करने पर भी वह छिपकर सिद्ध बाबा के दर्शन करने के लिए निकल पड़ती है | परन्तु सारे रास्ते वह अपने पति दुलीचंद को स्मरण करती लौटती है तो डर जाती है-"दुली इस रास्ते पर उसे देख लेता तो काट ही डालता |"[१३१]'अभी तो' कहानी की वृंदा की शादी को अठारह वर्ष हुए थे, पर वृंदा को कोई सन्तान नहीं थी | वृंदा सन्तान न होने के कारण संत्रस्त रहती है | पर व्याकुल वृंदा देखती थी कि "विमल न केवल अपनी ही गुहार के शोर से थक जाता है | उसे भी अनुर्वर होने की कीच में लसेड़ देता है | महीने-के-महीने जब आशा का तिलिस्म टूटता है तो एक दूसरे से आँख बचाने की निस्तेज़ वास्तविकता का मौसम शुरू हो जाता है |"[१३२]

'पुल' कहानी में कर्तारसिंह अपनी युवा बेटे के मृत्यु से उपजे संत्रास को भोग रहा है | कर्तारसिंह के बेटे की मृत्यु एक्सीडेंट में हो चुकी है | कर्तारसिंह की पत्नी वीराँ अपने बेटे को याद करके रोती रहती है | कर्तारसिंह वीराँ की तरह खुलकर रो भी नहीं पाता है | वह भीतर ही भीतर घुटता रहता है | वीराँ बार बार कर्तारसिंह को टोकती रहती है, किन्तु वह स्वयं को सँभाले रहता है-"क्या वह समझ पाती है कि कैसे जापता है कर्तार को अन्दर-ही-

अन्दर ? उसके पिण्ड को तो कोई दाह देनेवाला भी नहीं बचा |....कर्तार के पास भी ऐसा क्या है जिसकी आड़ लेकर वह हर पल बिथरती वीराँ की सार-सँभाल किया करे | यह लाचारी वह क्यों नहीं समझ पाती |"[१३३]

'इन दिनों' कहानी का वृद्ध भयभीत है | दिल्ली में आये दिन वृद्ध दांपत्यों की हत्याएँ हो रही थी | वृद्ध इन खबरों को जब अखबार में पढ़ता है तो वह असुरक्षा की भावना से संत्रस्त हो उठता है-"अब वे भीतर ही भीतर यह भी चाहते हैं कि लड़के-बच्चे आएँ और उन्हें ले जाएँ | उनकी जवानी के पहलू में दुबककर वे चैन से जिएँ | इस जोखम-भरे शहर के जबड़े में फँसे बैठे कौन जाने कब क्या हो जाए |"[१३४]

'यह कहानी नहीं' की लेखिका इसी समस्या से त्रस्त है | कहानी में जो आन्टी है वह चाहती है कि उनके कालगत हुए बेटे-बहू और पोता-पोती के बारे में लेखिका कुछ लिख डाले | लेखिका आन्टी के इसी माँग के कारण संत्रस्त है | लेखिका उनको यह समझा नहीं पाती कि लिखना किसी माँग के अनुरूप नहीं हो सकता-"मन में क्यों कोई टेर नहीं | जड़ता है परम, पथरीली | कोई संवेदना नहीं, क्या इसीलिए पीड़ा भी नहीं | जहन में सूचना है एक-क्षति की | चेहरा है एक- मृत्यु का, सर्वग्रासी विकराल | आगे जाकर एक लंबा रेगिस्तान आ जाता है- किसी दूसरे की नहीं अपनी लाचारी का | इस छोरहीन शून्यता का कहीं मैं भी हिस्सा तो नहीं-निस्ससंबंध,निस्संवेदन,निपूती | मैं आन्टी से नहीं अपने से जूझ रही थी |"[१३५]

'दलदल' कहानी में अमर अपनी अपंगता एवं पत्नी पर निर्भरता को लेकर संत्रस्त है | उसकी पत्नी आरती अपने अपंग

पति को अपने बॉस को कह कर नौकरी दिलवाना चाहती है | वह चाहती है उसका पति फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो जाए ताकि उसका स्वाभिमान आहत न हो | अमर आरती और उसके बॉस के रिश्ते पर शक करता है | यह शक उसे संत्रस्त कर देता है-"यह आदान-प्रदान उसे अर्थवान लगा | कुटिल,लदा हुआ | कोई तो बात होती है बीच में | ऐसे ही कोई किसी के लिए कुछ नहीं करने बैठता |"[१३६]

'उतना-सा देश' कहानी की माँ अपने बेटे की परेशानियों को लेकर संत्रस्त है | वह अपने बेटे रवि की पीड़ा को बाँटना चाहती है | लेकिन रवि अपनी पीड़ा को माँ के साथ बाँटना नहीं चाहता | माँ अपने भय के बारे में बेटे रवि से कुछ कह नहीं पाती-"रवि को क्या पता यहाँ रातों में कैसा-कैसा खौफ व्यापता है | पेड़ों से एक विक्षिप्त-सी सरसराहट अधीर होकर उठती है और काँच की लंबी खिड़कियों को थरथराहट से भर देती है | यह सब कुछ बाहर चल रहा होता है और पता नहीं किस रास्ते से भीतर चलता चला आता है और शिराओं के सिरे सुलगा जाता है | पहले से कच्ची नींद एकाएक टूट जाती है | फिर वही दाह....वही अबोले अनाम दर्दों का हाहाकार | साफ-सुथरी दीवारों पर पसरते जाते |"[१३७]

'तत-सम' उपन्यास में संत्रास के विभिन्न चित्र भरे पड़े है | 'तत-सम' उपन्यास की नायिका विधवा है | वह पुनर्विवाह करना चाहती है ताकि उसे सुरक्षा मिले | वसुधा, विवेक को चुनती है पर उसे मालूम होता है कि उसे पाकर वह स्वयं आरक्षित हो जायेगी | अतः वह उसी संत्रास को पूर्व कल्पित कर रही है | उसका भीतरी डर उसे कचोटता रहता है,"एक पैर चलता हुआ, दूसरा ठहरा हुआ | या तो एक चल पड़े या दूसरा भी ठहर जाये,पर इन दोनों में से

कुछ भी तो नहीं हो सकता | न ठहरा हुआ चल सकता है, न चलता हुआ ठहर सकता है | फिर ठहरे हुए पैर को पता भी क्या.....वह तो सुख-दुःख से परे है, जबकी चलते हुए पैर का मुकाबला चलती हुई दुनिया के साथ है !"[१३८]यहाँ वसुधा विधवा होने के बाद दुनिया से डरी हुई है | उसके सामने उलझनों का संत्रास है,"उलझन भरी हो सकती है उन स्थलों पर पैर रखने की चेष्टा जो पहले से ही बियाबाँ करार कर दिये गये हों | उससे भी अधिक कष्टप्रद,निष्ठा के स्तूपों के सम्मुख तनकर खड़े रहना | अपनी तत्परता को अपनी अनिष्ठा की तरह सहना |"[१३९]

अकेलेपन की समस्या :-

आधुनिक युग का व्यक्ति अपने परिवेश से सर्वथा अपरिचित है | अकेलेपन के संबंध में डॉ.इन्द्रनाथ मदान लिखते है- "अकेलेपन का बोध बहुत पुराना है | मध्यकालीन है | शायद इससे भी पहले का है | उपनिषदों में भी आँका जा सकता है | आज का अकेलापन मध्यकालीन या रोमांटिक अकेलेपन से भिन्न कोटि का है | मध्ययुग में यह आत्मिक स्तर पर है | रोमांटिक युग में वैयक्तिक स्तर पर और आधुनिक युग में स्थित नियति के स्तर पर |"[१४०]

वास्तव में अकेलापन तभी अनुभूत होने लगता है जब व्यक्ति दूसरों के साथ सार्थक संबंध खो देता है | समाज तथा परिवार में रहते हुए भी अनेक कारणों के परिणाम स्वरूप अकेलेपन की अनुभूति में छटपटाता है | अपने आप में सिमटकर अजनबीपन, टूटन, जड़ता, शून्यता को झेलता हुआ असंतुलित व्यवहार करने लगता है; निष्क्रिय बनता है | इस स्थिति के बारे में डॉ.शुकदेव सिंह लिखते है, "समूह, समाज, परिवार इत्यादि के

बीच रहकर भी व्यक्ति दूसरे के साथ बगीचे के वृक्ष की तरह एक अघट दूरी पर रहता है ।"[१४१] इस प्रकार दिनों-दिन मानव प्रतिमा एकाकी होती जा रही है और अकेलेपन का भार वहन कर रही है । बीमारग्रस्त व्यक्ति, वृद्ध, परित्यक्त्या तथा विधवा का अकेलापन तो उनके जीवन का पर्याय बनकर उन्हें बुरी तरह घायल करता है ।

राजी सेठ के कथा साहित्य में अकेलेपन की समस्या प्रतिबिंबित होती है । उनके 'समांतर चलते हुए','उसका आकाश', 'अपने दायरे','एक बड़ी घटना', 'मेरे लिए नहीं', 'उन दोनों के बीच','मैं तो जन्मा ही' 'तत-सम' उपन्यास में अकेलेपन की समस्या का अंकन हुआ है ।

'समांतर चलते हुए' कहानी का नायक अपने पत्नी की मृत्यु के बाद अकेलापन अनुभव करता है, "लगने लगा था, ऐसे स्थल पर खड़ा हूँ, जहाँ बीहड़ विस्तृत रेगिस्तान है,अकेलापन है, अकुलाहट है, रीते दरीचों से गुजरनेवाली हवा का शोर है,और कुछ नहीं ।"[१४२] 'उसका आकाश' में पक्षाघात के रोगी का शय्या से स्थायी संबंध है । जीवन साथी के अभाव और लकवे ने वृद्ध की अकेलेपन की पीड़ा को कई गुना बढ़ा दिया है । घर में वृद्ध का बेटा और बहू भी है लेकिन बेटे के पास अपने वृद्ध पिता के साथ संवाद स्थापित करने का समय तक नहीं है । इसी कारण वृद्ध अकेलेपन की समस्या से जूझ रहा है-"अकेले लंबे दिन-रात ठिठक-ठिठककर, कलेजे पर अपना वज़न महसूस कराते हुए गुज़रेंगे ।"[१४३]

'पुनःवही' कहानी का नायक देवव्रत घर में बड़ा है । इसी वजह से घर का सारा उत्तरदायित्व उसके सिर पर आ पड़ा है । देवव्रत पिता की मृत्यु के बाद बड़े होने के उत्तरदायित्व को निभाता

हुआ अपने आपको अकेला पाता है-"छोटे और बबली, बबली और छोटे ,इन दो पीड़ा-पुंजों के बीच सागर के लाइटहाउस की तरह वह खड़ा है, दर्द के थपेड़े खाता और उस अकेली व्यथा को सहता,जिसे केवल लाइट हाउस ही सह सकता है | ऊपर-नीचे,आगे-पीछे पानी की तरलता है | महत्त्व और मार्गदर्शन का बोध साथ है | गति है | आरोह-अवरोह का गीत-संगीत है | विविध मुद्राओं की रोचकता है | गंतव्य की ओर जाते घरों जैसे बेड़े हैं | दृष्टि-विस्तार में छाँह भरे पेड़ हैं और कितनी मुखर प्रगल्भ हवा है, फिर भी अपनी नियति में वह बड़ा और अकेला...अकेला और बड़ा नि:शब्द सहता हुआ खड़ा है |"[१४४]

'अपने दायरे' कहानी की पत्नी सब सुख-सुविधायें होते हुए भी पति के प्यार के अभाव में अकेलापन भोग रही है | पति ने अपने अहं और सोच के दायरे से बाहर आकर पत्नी के अंतर्मन तक पहुँचने की कभी कोशिश नहीं की | पति के ऐसे रवैये के कारण पत्नी अकेलेपन की शिकार है | वह लिखती है, "एक गहरा शून्य,अटूट निस्तब्धता और कभी न समाप्त होने वाला अकेलापन | न जाने यह अंधकार कहाँ ले जाएगा | गीले ईंधन-सा भीतर कुछ जलता है | धुआँ-ही-धुआँ देता है, न ज्योति, न उष्णता |"[१४५]

'एक बड़ी घटना' कहानी के पति को अपनी पत्नी की बिमारी और बहूओं द्वारा होनेवाला उपहास परिहास अकेला कर देता है | लाजो की मृत्यु सब के लिए एक घटना हो सकती है किन्तु उसके वृद्ध पति के लिए यह घटना मात्र व्यक्ति के इस संसार से उठ जाने की नहीं है | यह घटना है-"एक विशाल जनसमूह में, एक अंधेरे सर्द और खामोश कमरे में,एक जीवित व्यक्ति के नितांत अकेले छूट जाने की |"[१४६]

'मेरे लिए नहीं' कहानी की नायिका प्रीति अपना जीवन स्वतंत्रता से जीना चाहती है | वह 'विमेन लिव' के नारों पर टिकी हुई है, परंतु शीघ्र ही उसे अकेलेपन का अहसास होने लगता है,- "कैसा-कैसा लग रहा था-परदेश....बीमारी....गेस्ट-हाउस.....अकेलापन | करुणा-ही-करुणा....सौहार्द्र-ही-सौहार्द्र रह गया था भीतर....कैसे न होता ? सामने दीख रही थीं-उसकी तपती हुई कनपटियाँ...पनीली आँखें...|"[१४७]

'उन दोनों के बीच' कहानी का पक्षाघात का रोगी भी पत्नी की सेवा-सुश्रूषा के बीच भी स्वयं को अकेला पा रहा है | आगत दंपति को वह इसलिए रोकना चाहता है ताकि थोड़ी देर ओर उसका अकेलापन कट सके "अकेला छूटने से बचना चाहने की कातरता का | यह कहना क्या राहत देता कि जाने की घड़ी दस घंटे बाद भी आयी तो ऐसी ही होगी....ऐसे ही रंग-रूपवाली | तब भी इतना ही....|"[१४८]

'मैं तो जन्मा ही' कहानी का नायक नयना से दूर होने के कारण विरहावस्था में एकांत भोग रहा है-"यों तो जन्मत: हर कोई अकेला है | अंतत: भी | इसीलिए तो दो की जगह चार पैरों की यात्रा इतनी अमूल्य | खरखरी जिंदगी के बीच यही दो सुंदर शब्द- आशा, विश्वास |"[१४९]

'तत-सम' उपन्यास की वसुधा को तो सबसे अधिक अकेलेपन की समस्या सताती है | अकेलेपन का डर वसुधा को कभी नहीं छोडता, "अकेलेपन की दहशत से मुक्त महसूस हुआ उसे अपना इतने बड़े आकाश के तले का एकांत |"[१५०]

तनाव की समस्या :-

युवाचार्य महाप्रज्ञ मनुष्य में तनाव का कारण बहुत चिंतनीय बताते हैं | "हम मात्र बुद्धि के व्यापार को दर्शन मानते चले जा रहे हैं और सबसे बड़ा तनाव का कारण यही बन गया | यथार्थ में जब दर्शन होता है, तब तनाव नहीं होता | जो जानता है,देखता है,वह तनाव से नहीं भरता | जो नहीं जानता,नहीं देखता वह तनाव से भर जाता है | जो दूसरे व्यक्ति के प्रति संशय, अनास्था करता है तनाव से भर जाता है |"[१५१]

इलियट ने तनाव को परिभाषित करते हुए कहा है कि "तनाव से हमारा अभिप्राय किसी संघर्षात्मक परिस्थिति से है, जो विरोधी या विपरीत मनोवृत्तियों को उत्पन्न करती है |"[१५२]तनाव व्यक्ति के असामान्य मनोदशा या व्यवहार का परिचायक होता है | तनाव यह ऐसी शारीरिक व मानसिक दबाव की अवस्था है, जिसकी उत्पत्ति आवश्यकता की पूर्ति में बाधा उत्पन्न हो जाने पर होती है और इसका बुरा प्रभाव मनुष्य के शारीरिक व मानसिक जगत पर पड़ता है |

तनाव मनुष्य में असुरक्षा की भावना, हीन भावना, असफलता, उच्च आकांक्षाओं की आपूर्ति, निराशा, दबाव, संघर्षमय स्थिति आदि कई कारणों से निर्माण होता है | वर्तमान में पुराने मूल्यों का विरोध तथा नए मूल्यों का स्वीकार हो रहा है | नए पुराने की कश्मकश में मनुष्य टूट-सा रहा है | परिणामत : वह अनेक तनाव से घिरा है |

राजी सेठ की कहानी 'अस्तित्व से बड़ा' की रीनू तनाव में है | रीनू को अपने पहले प्रेम का अमूर्त व अनजाना अहसास समय निकल जाने के बाद पहचान में आता है | पति सुमंत के साथ जीवन प्रारंभ करते ही वह तनाव में घिर जाती है | एक ओर

मनचाहा पति तथा दूसरी ओर प्रेमी जो उसे अस्तित्व में बड़ा लगने लगा है | "उसकी उपस्थिति के दबाव और तनाव | चुभते हुए एहसास और मानसिक असुविधा उपजती स्थितियाँ |"[१५३]पति से परिणय के समय भी उसकी स्थितियाँ तनावपूर्ण ही है,-"घटनाओं के तनाव से मैं अवश्य अप्रकृतिस्थ रही होऊँगी,पर मेरी यह भावमुद्रा उसे (प्रेमी को)कहीं गहरे में संतोष दे सके,ऐसा मैंने अवश्य सोचा होगा |"[१५४]

'अपने विरुद्ध' कहानी का तनाव अधिक गहन है | कहानी में नायिका रूचि लिखना चाहती है और पति श्याम लेखन के विरोध में है | ऐसी स्थिति में रूचि पति की बात मान लेती है,परंतु रूचि को इस स्वीकार में सबसे अधिक तनाव झेलना पड़ता है | 'अकारण तो नहीं' कहानी की दीपाली को संतान न होने के कारण एक ओर सास का तो दूसरी ओर पति सुधाकर का व्यवहार तनाव दे रहा है | सुधाकर के शुक्राणु कमजोर हैं, परंतु आत्मछवि की सुरक्षा हेतु सुधाकर झूठ बोलता है कि दोष दीपाली में है | सास अपने बेटे की बात सच्ची मानकर दीपाली को तनाव दे रही है | इंजेक्शन सुधाकर को लगते हैं, साथ ही रुई का सेंक सुधाकर की कमर के लिए है, परंतु दिखाया कुछ और जा रहा है-"दोनों ओर का अत्याचार सहती है दीपाली ! अत्याचार का गुर है कि दाँत भी हों और कांटे भी | दीपाली के पास क्या अपना कोई गुर नहीं कि दाँत भी हो पर कांटे भी नहीं ?"[१५५]

पति की बदचलनी से तंग आकर 'उसी जंगल में' कहानी की नायिका गृहत्याग करती है | तनाव से मुक्ति के लिए संघर्ष करती है | वह स्वावलंबन का मार्ग खोजती है ताकि अध्यापिका बन सके परंतु उसे अपनी बेटी को सोमा भाभी के पास छोडना

पड़ता है | नायिका सोमा भाभी और अपनी बेटी के रिश्ते को देखकर तनाव में आ जाती है-"वह सोमा भाभी के गले में झूल जाती है | सोमा भाभी निहाल हो जाती | अपेक्षा का वह छोटा पर दमघोंटू तनाव उसके भीतर बुलबुले की तरह बैठ जाता |"[१५६]

'अनावृत कौन' कहानी की नवविवाहिता घर की दुःखद घटना की स्थिति को लेकर तनाव में रहती है | उसके जेठ की मृत्यु हो चुकी है | ऐसी स्थिति में वह यह नहीं समझ पाती कि ऐसे दुःख की घड़ी में अपनी जेठानी से कैसे पेश आये-"मैं संकुचित ही हुई रहती-निरावेग, चुप, यथासंभव, सामान्य |"[१५७]

'अपने दायरे' कहानी की पत्नी पति के व्यवहार से तनावग्रस्त जीवन जी रही है | वह पति से प्रत्यक्षता कुछ कह नहीं पाती | भीतर ही भीतर घुटती रहती है | पति के चरित्र का दुहरा तिहरापन उसे पीड़ा देता है | वह अपनी तनावग्रस्त स्थिति के बारे में लिखती है-"कितना,कितना,कितना कुछ है जो अंदर ही रह जायेगा | चिता की राख के साथ भस्मीभूत हो जायेगा | लपटों के सीने में धधकते बवंडर कौन देख पायेगा? एक लपट में सब कुछ जल जाता है |"[१५८]

'तीसरी हथेली' कहानी में नायिका का तनाव प्रेम संबंधों की असफलता से निर्मित है | नायिका घर भी चाहती है, अपने प्रेमी का साहचर्य भी चाहती है, परंतु विवाहित प्रेमी के साथ निकलने से परहेज है | 'तीसरी हथेली' कहानी का नायक भी विवाहेत्तर प्रेम के कारण तनाव में है | नायक और उसकी प्रेमिका नंदिता के रिश्तों में ठंडापन समाता जा रहा है | नंदिता को घर चाहिए था वह नायक नहीं दे सकता था-"सामने तैरते हुए लकड़ी के टुकड़े की तरह दूर होते जाने का अहसास देती है वह....क्यों नहीं आगे

लपककर, अधिकार से उसे थाम लेता | जानता है उसे अच्छा लगेगा...आश्वस्त होगी...फिर ऐसा क्यों नहीं कर पाता वह..? कोई भविष्य उसकी मुट्ठी में नहीं थमा पाता है...क्या इसलिए ?"[१५९]

'दूसरी ओर से' कहानी में नंदिता अपनी माँ और रमणकाका के संबंधों को जानती है, तो तनावग्रस्त हो जाती है | नंदिता नहीं चाहती कि उसकी माँ रमणकाका से कुछ संबंध रखे | वह अपनी माँ और रमणकाका के रिश्ते को स्वीकार नहीं कर पा रही है | वह अपने अस्वीकृति को अपने माँ के समक्ष प्रकट नहीं कर पा रही थी | नंदिता उसकी माँ और रमणकाका के बीच जो रिश्ता पनप रहा है उससे अप्रसन्न और तनाव में है-"वह क्यों नहीं सोच पा रही कि संतप्त तो मैं हूँ, मैं | वह ऐसा कुछ करने की देहरी पर खड़ी हैं- मुझसे छीन लेने की, मुझे नकार देने की और रमणकाका को स्वीकार लेने की | माँ के हर क्षण पर कुंडली मारकर बैठी एकाधिकार का सुख भोगती मैं⋯मैं तनाव में तनी प्रतीक्षा कर रही थी⋯⋯माँ कुछ कहेंगी⋯अभी बोलेगी⋯⋯ अभी कुछ झनझनाकर टूटेगा और सारी सुख शांति को किरच-करच कर देगा |"[१६०]

'नगर-रसायन' कहानी की नायिका का पति विदेश में रहता है | अतः घर की आवश्यकताओं और महेमानों की सुविधाओं के बीच ताल-मेल उसे ही बिठाना पड़ता है | घर की सभी जरूरतों को पूरा करते करते वह मानसिक रूप से टूट चुकी है | हमेशा तनाव में रहती हैं-"घर....?घर एक ऐसा फैलाव, जहाँ तनाव समुद्र की उत्तरोत्तर बढ़ती लहरों की तरह पूरी हिंसा और शोर के साथ सीने पर बढ़ता-चढ़ता आता है,ओर जब बिखरता-टूटता भी है, तब जो हाथ लगता है वह गहरी थकान से लथपथ आत्मलिप्तता का क्षण, जिसमें कोई किसी का कुछ नहीं होता,किसी को कुछ नहीं दे

सकता | तब आत्मदया हाथ में होती है-विकार से अधिक हथियार की तरह |"[१६१]

'सदियों से' कहानी की मिन्नी का तनाव प्रेम के पूर्व प्रसंगों और वर्तमान के दांपत्य संबंधों के बीच अडिग रूप में स्थित है जहाँ दोनों स्थितियाँ अपरिहार्य है | मिन्नी न अपने पूर्व प्रेमी को भूल पाती है और न ही अपने पति को उपेक्षित कर सकती है | मिन्नी अपने प्रेमी के द्वारा भेजे गये पत्रों को देखकर तनाव में आ जाती है | वह सोचती है कि,"नरेन को क्या पता वह क्या-क्या सोचा करती है | इस निर्विकारता के लिए किन-किन अग्नि-कुंडो में से गुजरती है | इस मन के दर्पण को साफ़-सुथरा रखना चाहती है | इस पुलिंदे के उद्घाटन ने किसी दिन ढग ही लिया तो उसकी मंशा की पवित्रता को कौन मानेगा |"[१६२]

'इतना-सा देश' की माँ बेटे के दुःख दर्द को न बँटा सकने की वजह से तनावग्रस्त हो जाती है | उसका तनाव इतना बढ़ जाता है कि वह रो पड़ती है- "कुछ...कुछ भी तो नहीं हुआ पर वह दाँत भींचकर रो पड़ी | रवि को नहीं, पीछे छूटे देश को याद करके | कैसे पहुँच सकती है वह वहाँ...और यहाँ भी कैसे ? इतने विराट भूखंड में अपने इतने-से देश जैसे शिशु तक | किस रास्ते से चलना शुरू करे कि अपना आप इतना अधिकाररहित न लगे | इसी एक रिश्ते का असल उसकी आत्मा का बल बन सके |"[१६३]

'निष्कवच'उपन्यास के वृत्तांत एक का विशाल और उसकी माँ नीरा और बासू के संबंधों को लेकर तनाव में है |

निम्नवर्ग के शोषण की समस्या :-

सुप्रसिद्ध अमेरिकन समाजशास्त्री सैन्टर्स के शब्दों में

"निम्नवर्ग उन लोगों का वर्ग होता है, जो अपनी आजीविका के लिए कायिक श्रम पर निर्भर रहते हो | जीविकोपार्जन के लिए अपने कायिक श्रम पर निर्भर रहने वाले इस गरीब वर्ग के लिए पीड़ित, सर्वहारा आदि नाम है |"[१६४]

शोषण तो हमेशा अपने से नीचेवाले का ही होता है | इसी कारण भारतीय परिवेश में निम्नवर्ग, मध्यवर्ग, नारी का शोषण अधिक हुआ है | उच्चवर्ग हमेशा निम्नवर्ग को गुलामी की दासता में जकडकर रखता है और उसका शोषण करता रहता है | निम्नवर्ग भी अपने पर होनेवाले अन्याय-अत्याचार के विरोध में आवाज नहीं उठाते | राजी सेठ के 'यात्रामुक्त','घोडों से गधे','आमने सामने' आदि कहानियों में निम्नवर्ग के शोषण की समस्या का अंकन किया है |

'आमने-सामने'कहानी के नौकर में कुछ विशिष्ट बनने की आकांक्षा है | कहानी का नौकर घरेलू नौकरी छोडकर ड्रायविंग करना चाहता है | वह अपने हैसियत से ऊपर उठाना चाहता है | परंतु कहानी की उच्चवर्गीय नायिका को डर है कि उसके चले जाने के बाद घर का कामकाज कौन संभालेगा ? नौकर जब ड्रायविंग करने की बात का उल्लेख नायिका के समक्ष करता है, तब वह कुछ जवाब नहीं देती | वह यह जताकर उनका शोषण करते है कि, "साइकल सीखते समय टूटे उसके पाँव की खाट-लगी विवशता में उसकी देखभाल करके⋯उसके बाप की दारुण बिमारी में पचहत्तर रूपये का मनीऑर्डर भेजकर | हम यह समझाने में सफल हो गये थे कि उसकी माँ को उस समय उसकी नहीं, उन पैसों की अधिक ज़रूरत है |"[१६५]असल में उच्चवर्ग अपने नौकरों पालतू प्राणी

समझते है | अपने स्वार्थ हेतू उच्चवर्ग निम्नवर्ग को अपनी हैसियत से
आगे बढ़ने नही देते |

'यात्रामुक्त' कहानी के केशव का पिता अपने यौवनकाल से लेकर वृद्धावस्थातक मालिक की चाकरी करता है | उन्होंने समर्पण भाव से दासता को स्वीकार कर लिया था | पत्नी के मृत्यु के बाद वह अपने बेटे केशव को अपने साथ हवेली ले आते है | केशव भले ही चाकरी करता है, लेकिन वह पढ़ाई में हमेशा आगे रहता है | मालिक के बेटे तरुण बाबू को यही बात खटकती थी | केशव पढ़ाई में उससे आगे निकल न जाये इसलिए तरुणबाबू केशव को हमेशा कामों में व्यस्त रखता है-"वह अब नहीं चूकते...किसी एक मौके पर भी नहीं | घात में बैठे रहते हैं कि कैसे उनकी ही उम्र में उन्हें लाँघ जानेवाली उसकी ऊँचाई को पीसकर रख दिया जाए | अपने अंह को सेंकन का यह खेल उन्हें पसंद आने लगा है-पुकारना और आदेश लेने को तत्पर खड़ी दासता को,अपने सामने खड़ा कर लेना | बड़े मालिक बिस्तर से बँधे है | यह हक उन्होंने अब अपने को खुद दे लिया है |"[१६६]

'घोडों से गधे' कहानी की मिसेस सक्सेना अपने नौकर को पढ़ा लिखाकर बड़ा-बाबू बनाने का व्रत लेती है | परंतु जब उसकी अपने नौकर दीनू को गधों से घोड़े बनाने की सारी प्रतिज्ञा पोच सिद्ध होती है, तब वह अपने पति से कहती है-"तुम्हें मेरी तरह हरदम गधों से घोड़े बनाने पड़ते तो तुम्हारी अक्ल ठिकाने लग जाती | असल में इन लोगों में मोटिवेशन ही नहीं है ऊपर उठने का | उतना करने के लिए तो खुद पाताल तक जाकर मेहनत

करनी पडती है |"[१६७]वास्तव में उच्चवर्ग मात्र दिखावे के लिए निम्नवर्गीय लोगों को प्रोन्नत करने का व्रत लेते हैं |

वास्तव में उच्चवर्गीय लोग निम्नवर्ग को दासता की जंजीर में इतना जकड़कर रखते है कि वह चाहकर भी उससे मुक्त नहीं हो सकता | उच्चवर्ग झूठी सहानभूति दिखाकर निम्नवर्ग का शोषण करते रहते हैं |

देशविभाजन की समस्या :-

देशविभाजन ने जनमानस की चेतना को तहस-नहस कर दिया | "देशविभाजन और सांप्रदायिक दंगे की आँधी-तूफ़ान में व्यक्ति के समस्त मानवीय मूल्य, आस्था और विश्वास पूर्णरूपेण धराशायी हो गये | मानवीय संबंधों और मानवीय मूल्यों का विघटन पहले परिस्थिति और भूगोलगत था, फिर मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक स्तरों पर चलने लगा | देशविभाजन हमारी स्वतंत्रता और राष्ट्रीय उपलब्धि का ग्रहण है जिसकी काली छाया में मानवता क्षत-विक्षत और आहत हुई है |"[१६८]बढ़ते साम्राज्यवादी आर्थिक दबावों और वैश्विक बाजार,उपभोक्तावादी संस्कृति, सांप्रदायिक दंगे तथा इसी प्रकार की तमाम विखण्डनवादी गतिविधियाँ विभाजन की पृष्ठभूमि की वह आधाराशिलाएं हैं,जिन पर कभी सभ्य समाज का नवनिर्माण नहीं हो सकता |

दंगो के कारण मौत की गहराती छाया में घर-बार छोडकर अपनी जमीन से काटकर रहने के एहसास में लाखों लोगों में बाहर ही क्या अन्दर भी रक्तपात हुआ | "भयंकर रक्तपात के बीच आंतरिक रूप से एक विघटन समा गया जो कहीं हमें हमारे दिमागों और दिलों में शरणार्थी बनाता चला गया | अपने वतन से कटकर शरणार्थी बने आदमी की यातना और करुणा उसके अन्त

को दलित कर गयी | सच में विभाजन के अभिशाप को भारतीय जनता आज भी भोग रही है |"[१६९]

राजी सेठ उस पीढ़ी की कथाकार है,जिसने विभाजन को देखा है, विभाजन के दंश को झेला भी है और महसूस भी किया है | राजी सेठ ने 'बाहरी लोग','किसका इतिहास,''मुलाकात','ठहरो इंतजार हुसैन' आदि कहानियों में देशविभाजन की समस्या और उससे उभरती पीड़ा का चित्रण किया है |

'बाहरी लोग'कहानी की बूढी विधवा स्त्री ने देशविभाजन के समय हुए दंगो में अपनी सारी संपत्ति के साथ साथ अपने जीवन साथी को खोया था | विभाजन के पश्चात जिस ट्रेन से उसका परिवार लौट रहा था, उस ट्रेन में बारह घण्टे गोलीबारी हो रही थी | सभी मुसाफिरों को गोलियों से भून डाला था | उस बारह घण्टे के प्रचंड गोलीबारी से विधवा का पति बच निकला था | परंतु इस सदमे को वह सह नहीं सका और उसकी मृत्यु हो गई | इस घटना का खौफ वृद्ध स्त्री के मन पर इतना हावी हो गया था कि वह उन स्मृतियों से बाहर निकल नहीं पा रही थी | वह विभाजन की त्रासद स्मृतियों में अभी तक झुलस रही है | बूढी विधवा स्त्री बार-बार इस घटना को दोहराती है | वास्तव में अतीत की यादे आज भी उसके दिलो-दिमाग में घर कर बैठी है |

'किसका इतिहास' कहानी के नायिका के पिता अपने बेटे अतुल और मुस्लिम युवती शमीम के शादी के विरुद्ध है क्योंकि वह देशविभाजन के समयहुए अत्याचारों को भूल नहीं पाये है | वे कहते है-"तू क्या समझायेगी और वह भी क्यों समझेगा आखिर यह मेरा इतिहास है,उसका नहीं.....यह दर्द भी मेरा ही है, बस

मेरा......इसे मेरे पहलू में खड़ी मेरी हमसफर पीढ़ी ही समझ सकती है, भावी नहीं.....जा कह दे उससे......।"[१७०]

'मुलाक़ात' कहानी में भी उक्त समस्या का अंकन हुआ है। 'मुलाक़ात' कहानी का निर्वासित पाकिस्तान के लाहौर शहर में रहता था। विभाजन के बाद वह भी अपना घर-बार छोड़ कर भारत रहने आया है। उसे अभी भी याद है कि जब देश का बँटवारा हुआ था, उस समय अपना पुश्तैनी घर छोडते समय उनकी पत्नी अपने छूटते घर को देखकर आँसुओं के उलार में डूबी थी। उसी समय उसने अपनी पत्नी को दिलासा देते हुए कहा था कि- "किसलिए यह रोना धोना ?... जानती हो तुम कोई घर-वर नहीं छोड़ रही हो। अपने देश जा रही हो,अपने देश....पंडित नेहरू को आज़ादी की बधाई देने। तुम किस्मतवाली हो। भगवान का शुक्र करो,लोगों के सारे मर गये ,तुम्हारा एक भी नहीं मरा।"[१७१]

विभाजन ने सिर्फ इन्सान के तन-मन को ही लहुलुहान नहीं किया है,बल्कि उसके आत्मसम्मान को भी इस कदर ठोकरे खाने के लिए विवश कर दिया है कि इन्सान अपने एवं अपने परिवार के जिदा बच जाने पर अफ़सोस जाहिर करे। 'मुलाकात' कहानी का निर्वासित अपने देश में आने पर परिवार का पेट भरने के लिए नौकरी ढूँढने निकल पड़ता है। उसे अपने देश में नौकरी नहीं मिलती। उसके स्वाभिमान को कुचल दिया जाता है। उसके आत्मसम्मान को इतनी ढेस पहुँचती है कि वह अपने ही बच्चों के बच जाने पर अफ़सोस व्यक्त करता है-"सोच रहा हूँ....लगातार सोच रहा हूँ। उन फसादों में सब के बच्चे मर गये....मेरे क्यों नहीं मरे....क्यों जिन्दा रह गये सब के....।"[१७२]

'ठहरो,इंतजार हुसैन' कहानी का चालीस जमा उन्नीस साल का बूढा आज भी देशविभाजन के समय हुई घटना को याद करके खून के आँसू रोता है | देश के बँटवारे में हुए दंगो में नायक ने अपनी प्रेमिका निक्की को खोया था | नायक आजादी के दिन उस घटना को याद करके काँप उठता है | नायक को आज भी "अपनी कलाई पर पड़ती पिता की मजबूत पकड़ याद है और अपने कानों में थरथराती निक्की की घायल गहराती चीख | चीख ऐसी थी जैसे जिबह होते जानवर के गोश्त में से कोई पागल दानेदार दराँती वापस खींचता खींचता चला जाता है |"[१७३]

देशविभाजन एक ऐसी समस्या है, जिसमें लोगों ने अपने घर को,संपत्ति को ही नहीं बल्कि अपनों को खोया हैं | उक्त समस्या का शिकार हुए लोगों के दिलों में अतीत में हुई घटनाओं की स्मृति एक दर्द बनकर रह जाती है |

वृद्धों की समस्याएँ :

आज के युग में अन्य कई समस्याओं के समान वृद्धों की समस्या भी एक नई समस्या के रूप में उभर रही है | डॉ.आगलावे का कथन विचारणीय है-"वृद्धों की समस्या वैयक्तिक होते हुए भी उससे निर्मित समस्या किसी विशेष वृद्ध से संबंधित नहीं है | देश के बहुसंख्य वृद्धों के संदर्भ में ये समस्याएँ निर्माण हो रही है | परिणामतः वृद्धों की समस्या सामाजिक समस्या का रूप धारण कर रही है |"[१७४]

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय जन-जीवन मूल्य-संक्रमण की स्थिति से गुजर रहा है | कुछ सार्थक स्थापित मूल्य विघटित होकर नये मूल्य निर्माण हो रहे है | नगरों महानगरों की आपाधापी की जिंदगी,व्यस्तता,निहायत स्वार्थवृत्ति, भागदौड आदि ने मिलकर

समस्त मानवीय रागात्मक संबंधों पर प्रश्नचिन्ह लग गया हैं | इन्हीं के परिणाम स्वरूप वृद्धों की समस्याएँ बढ़ रही हैं |

राजी सेठ की 'उसका आकाश','एक बड़ी घटना','इन दिनों'आदि कहानियों में वृद्धों की समस्या का अंकन किया गया है |'उसका आकाश' कहानी का वृद्ध बहू-बेटा और पोते के होते हुए भी अकेला है | वृद्ध लक़वाग्रस्त है | उसका दायाँ भाग मार चुका है | पत्नी की मृत्यु हो चुकी है | वह जीवन के इस अंतिम पड़ाव में अकेला रह गया है | वृद्ध की बहू है लेकिन बहू की आँखों में उसके प्रति जो तिरस्कार है, वह उसे रोज तिलतिल मार रहा है | वह अपनी पत्नी को याद करता है और सोचता है-"वह होती तो उसे रोज़-रोज़ बड़ी बहू का सामना न करना पड़ता | रोज़ एक अनाम-से तिरस्कार की पैनी अनी से छिदना न होता |"[१७५] पोते वरुण के आने से उनका खालीपन दूर हो जाता है | वृद्ध को अपने पोते वरुण के हाथों से दूध पीना पसंद है | क्योंकि वह बहू की तिरस्कार भरी नजरों से खुद को बचाना चाहता है-"संकट की एक घड़ी तो टलेगी | आँख के भाले से,आँख के रास्ते ही सारे अस्तित्व को छेद डालना....दुखियारी बड़ी बहू |"[१७६]

वृद्ध के बेटे कमल के पास अपने पिताजी के साथ बैठ कर बातें करने के लिए समय नहीं है | वह जब भी अपने पिता के कमरे में आता है तब वह कैसे हैं बाबूजी ? आज कैसा लग रहा है ? इतना पूछ कर पिता का उत्तर सुने बिना ही वहाँ से चला जाता है | पिता अपने बेटे से अधिकार भरा-मान भी नहीं कर सकता, क्योंकि संवाद की आवश्यकता उन्हें स्वयं को है | वह खुद अपने बेटे से संवाद स्थापित करना चाहते है | ताकि थोड़े देर के लिए सही अकेलेपन से मुक्ति मिल जाए-"वह उत्तर न भी दे,और दिनों

की तरह 'ठीक हूँ' न भी कहे,तो भी क्या फर्क पड़ेगा ?....शायद पड़े ? उसने उत्तर नहीं दिया, चुप पड़ा रहा | उत्तर न देने से सचमुच फर्क नहीं पड़ा | उसका बेटा अपनी चीज़े उठाकर चलता बना | अपने सही हो जाने का उसे गहरा मलाल हुआ | इससे तो अच्छा था वह उत्तर देता |...उसका उत्तर देना उसके अपने लिए अनिवार्य है, एक दम अनिवार्य | संवाद को कायम रखने की ज़रूरत उसकी है,मात्र उसकी | इन लम्बे-लम्बे दिनों और काली-काली रातों के अटूट सन्नाटे में आवाज़ बनाए रखने की गरज़ भी उसकी है,मात्र उसकी |"[१७७] वृद्ध के लिए खिड़की से दिखाई देने वाला आसमान का एक टुकड़ा ही उसका आकाश है |

पति-पत्नी की एक-दूसरे के साथ और सहयोग की आवश्यकता जितनी वृद्धावस्था में होती है,उतनी शायद यौवन में नहीं | उन्हें एक-दूसरे का सहवास न मिले, तो अकेलापन उनकी इस अवस्था को और भी भयावह बना देता है | राजी सेठ की 'एक बड़ी घटना' कहानी में वृद्ध की इसी समस्या को दर्शाया है | वृद्ध की पत्नी लाजो बिमार है | वह जीवन की अंतिम घडियाँ गिन रही है | किसी भी पल कुछ भी हो सकता है | लाजो की खाट अलग कमरे में बिछा दी गई है | जब भी लाजो को कुछ हो जाता है तब घर के सारे सदस्य उसके चारपाई के आसपास इकट्ठा हो जाते हैं | लेकिन लाजो का पति अकेला हो गया है | वह चाहता है कि उसकी खाट भी पत्नी के कमरे में बिछा दी जाए ताकि भयावह अकेलेपन से छूटकारा मिल जाए | किन्तु उसकी मन:स्थिति का एहसास परिवारजनों को नहीं है-"इस हड़बड़ी में किसी की दृष्टि उस कोने में नहीं जाती जहाँ पुरानी भूरी शाल ओढ़े गुड़ी-मुड़ी बैठा है,और बैठा रहता है | नसों के इस तनाव के साथ न कातर होता है, न अपनी

जगह से हिलता है | सामने अँगीठी में अंगारे धीरे-धीरे ठंडे हो जाते हैं | फीकी राख हवा में उड़ने लगती है और वह उसी तरह निश्चल घुटनों में सिर दिये बैठा रहता है | कोई ध्यान से देखे तो शायद जाने कि हर ध्वनि के प्रति सतर्क उसके कानों की लौ बार-बार काँपती है,परंतु कहने-सुनने को आतुर नहीं होती |"[१७८]

लाजो का पति भीतर ही भीतर टूटता जा रहा है लेकिन उसकी टूटन को कोई नहीं समझ पा रहा है-"वह धीरे-धीरे उस बड़े कमरे से जुड़ती जाती है और इस कमरे से छूटती जाती है | इस छोटे कमरे से कण-कण वह जितना छूटती जाती है वह उतना ही टूटता जाता है |"[१७९]

'इन दिनों' कहानी का वृद्ध दांपत्य बच्चों के होते हुए भी असुरक्षित जीवन जी रहा है | रोज होनेवाली वृद्ध दांपत्य के हत्याओं की खबरों को सुनकर यह दांपत्य डर-सा गया है | बच्चे अपने माता-पिता के डर को समझ नहीं पाते "यह सब रेशों में उलझी हुई बातें हैं | मन में हरदम टप-टप टपका करती हैं, बाहर से दिखाई नहीं देतीं | इस तरह इतनी ढेर-सी चीज़ों के बीच अकेला छूट जाने का डर अजीब रंगत का है | दिखाई तक नहीं देता क्योंकि डर की कोई शक्ल तो नहीं होती |"[१८०]वृद्ध दांपत्य चाहता है उनके बच्चें आये और उन्हें ले जाए ताकि रोज के डर से मुक्ति मिले | लेकिन बच्चों से उन्हें कोई सहायता नहीं मिलती | वह खुद डर से बाहर निकलने की कोशिश करते है |

राजी सेठ ने इन तीन कहानियों के द्वारा वृद्धों की समस्याओं का यथार्थ स्तर पर चित्रण किया है |

संदर्भ सूची

१. समकालीन कहानी और उपेक्षित समाज - डॉ.श्रीमती प्रेमसिंह, डॉ.रिम्पी खिल्लन, पृष्ठ.३८

२. समकालीन कहानी और उपेक्षित समाज - डॉ.श्रीमती प्रेमसिंह, डॉ.रिम्पी खिल्लन, पृष्ठ.३३

३. समकालीन हिंदी कहानी में समाज संरचना - मोनिका हारित, पृष्ठ.२१

४. मन्नू भंडारी के साहित्य में चित्रित समस्यायें - डॉ.मालती जाधव, पृष्ठ.९

५. अध्ययन और आलोचना- डॉ.रामरतन भटनागर, पृष्ठ.१०

६. मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन डॉ.ममता शुक्ला, पृष्ठ.२०

७. मन्नू भंडारी के साहित्य में चित्रित समस्यायें- डॉ.मालती जाधव, पृष्ठ.२३६

८. मन्नू भंडारी के साहित्य में चित्रित समस्यायें- डॉ.मालती जाधव, पृष्ठ.२३६

९. आठवें दशक की हिंदी कहानी में जीवनमूल्य - डॉ.रमेश देशमुख, पृष्ठ.११

१०.आठवें दशक की हिंदी कहानी में जीवनमूल्य - डॉ.रमेश देशमुख, पृष्ठ.२१८

११.महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता - डॉ.शशि जेकब, पृष्ठ.८१

१२.व्यावहारिक हिंदी कोश, पृष्ठ.१०६

१३.आठवें दशक की हिंदी कहानी में जीवनमूल्य - डॉ.रमेश देशमुख, पृष्ठ.२३१
१४.मन्नू भंडारी के साहित्य में चित्रित समस्यायें-डॉ.मालती जाधव, पृष्ठ.३१
१५.अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.२४
१६.ढलान पर (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.३७
१७.राजी सेठ:कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृष्ठ.३१
१८.ढलान पर (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.३८
१९.अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.२३
२०.अपने विरुद्ध (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.८५
२१.अकारण तो नहीं (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.७५
२२.किसके पक्ष में (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.८७
२३.अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.२९
२४.अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.५३
२५.उसी जंगल में (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.६३
२६.अन्धे मोड़ से आगे - राजी सेठ, पृष्ठ.११२
२७.अपने विरुद्ध (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.८३
२८.अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.३०
२९.अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.३२
३०. मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन - डॉ.ममता शुक्ल, पृष्ठ.१९२
३१.अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.५३
३२.दलदल (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृष्ठ.६०
३३.आठवें दशक की हिंदी कहानी में जीवनमूल्य - डॉ.रमेश देशमुख, पृष्ठ.१११

३४.समांतर चलते हुए (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.२०
३५.अमूर्त कुछ (अन्धे मोड़ से आगे) राजी सेठ, पृष्ठ.२३
३६.अस्तित्व से बड़ा (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.५३
३७.पुन: वही (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ - पृष्ठ.१७
३८.पुन: वही (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ - पृष्ठ.७१
३९.किसका इतिहास (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.१६
४०.नगर रसायन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.११०
४१.तुम भी (यात्रा-मुक्त) राजी सेठ, पृष्ठ.८२
४२.मैं तो जन्मा ही (यह कहानी नहीं) राजी सेठ, पृष्ठ.५५
४३.मीलो लंबा पुल (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.८७
४४.निष्कवच वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृष्ठ.६१
४५.एक यात्रांत (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.५९
४६.राजी सेठ: कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृष्ठ.२५
४७.हिंदी अनुशीलन - कामता प्रसाद कमलेश, सितंबर-दिसंबर १९९८, पृष्ठ.३३
४८.समकालीन हिंदी उपन्यास - एन.मोहनन, पृष्ठ.१३७
४९.समांतर चलते हुए (अन्धे मोड़ से आगे) राजी सेठ, पृष्ठ.२६
५०.मैं तो जन्मा ही (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.५५
५१.मैं तो जन्मा ही (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.५८
५२.योग-दीक्षा(तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.८२
५३.किस्सा बाबू बृजेश्वरजी का (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.२६
५४.अकारण तो नहीं (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.६७
५५.राजी सेठ:कथा सृष्टि एवं दृष्टि - डॉ.कश्मीरी लाल, पृष्ठ.२८
५६.अन्धे मोड़ से आगे - राजी सेठ, पृष्ठ.११५

५७.अनावृत कौन (तीसरी हथेली) -राजी सेठ, पृष्ठ.२५
५८.परतें (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.३५
५९.तत-सम - राजी सेठ, पृष्ठ.१०७
६०.नालंदा विशाल शब्दसागर - श्री नवलजी, पृष्ठ.७९७
६१.दूसरी ओर से (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.१०१
६२.स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में नारी के स्वतंत्र्य रूप- डॉ.गणेश लाल, पृष्ठ.९६
६३.सहकर्मी (ग़मे-हयात ने मारा) राजी सेठ, पृष्ठ.३१
६४.अपने विरुद्ध (अन्धे मोड़ से आगे) -राजी सेठ, पृष्ठ.८५
६५.गलत होता पंचतंत्र (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.१०३
६६.स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में अलगाव की समस्या - डॉ.बिंदु दूबे, पृष्ठ.१७
६७.स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में अलगाव की समस्या - डॉ.बिंदु दूबे, पृष्ठ.२२
६८.कहानी: स्वरूप और संवेदना- राजेंद्र यादव, पृष्ठ.१६९
६९.अस्तित्व से बड़ा (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.५५
७०.सदियों से (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.१६
७१.उसका आकाश (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.३५
७२.एक बड़ी घटना (तीसरी हथेली) - राजी सेठ,पृष्ठ.१२३
७३.अनावृत कौन (तीसरी हथेली) -राजी सेठ, पृष्ठ.२५
७४.अभी तो (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.७४
७५.बुत (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.८४
७६.बुत (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.८५
७७.पुतले (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.५३

७८.एक यात्रांत (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.५८
७९.अपने विरुद्ध (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ. ८४
८०.किसके पक्ष में (अन्धे मोड़ से आगे) -राजी सेठ, पृष्ठ.९०
८१.अकारण तो नहीं (यह कहानी नहीं) राजी सेठ, पृष्ठ.७५
८२.अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.५४
८३.निष्कवच वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृष्ठ.२८
८४.निष्कवच वृत्तांत दो - राजी सेठ, पृष्ठ.११३
८५.तत-सम -राजी सेठ, पृष्ठ.१६१
८६.किसका इतिहास (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.१७
८७.तीसरी हथेली - राजी सेठ, पृष्ठ.६४
८८.मैं तो जन्मा ही (यह कहानी नहीं)- राजी सेठ, पृष्ठ.६१
८९.आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान - डॉ.डी.एन श्रीवास्तव, पृष्ठ.७३
९०.समांतर चलते हुए (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.१७
९१.अस्तित्व से बड़ा (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.५५
९२.अपने विरुद्ध (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.८५
९३.किसके पक्ष में (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.९३
९४.गलत होता पंचतंत्र (अन्धे मोड़ से आगे) राजी सेठ, पृष्ठ.१०५
९५.अन्धे मोड़ से आगे - राजी सेठ, पृष्ठ.११९
९६.किसका इतिहास (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.१९
९७.तीसरी हथेली - राजी सेठ, पृष्ठ.६९
९८.योग-दीक्षा (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.८४
९९.मेरे लिए नहीं (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.१३१
१००. उसी जंगल में (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.६५
१०१. उन दोनों के बीच (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.१०१
१०२. सदियों से (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.१६

१०३. सदियों से (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.२०
१०४. अभी तो (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.७६
१०५. दूसरे देशकाल में - राजी सेठ, पृष्ठ.९८
१०६. अकारण तो नहीं (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.७४
१०७. निष्कवच वृत्तांत एक - राजी सेठ, पृष्ठ.२७
१०८. निष्कवच वृत्तांत दो- राजी सेठ, पृष्ठ.७३
१०९. तत-सम - राजी सेठ, पृष्ठ.२६
११०. प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्य में अस्तित्ववाद - डॉ.शुकदेव सिंह, पृष्ठ.९०
१११. सातवें दशक के हिंदी उपन्यास - डॉ.रमणभाई पटेल, पृष्ठ.२८
११२. समांतर चलते हुए (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.२०
११३. अमूर्त कुछ (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.२७
११४. उसका आकाश (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.४२
११५. अस्तित्व से बड़ा (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.५५
११६. एक यात्रांत (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.६१
११७. पुन: वही (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.६६
११८. अपने विरुद्ध (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.८२
११९. किसके पक्ष में (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.९४
१२०. अन्धे मोड़ से आगे - राजी सेठ, पृष्ठ.११६
१२१. अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.२२
१२२. अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.३४
१२३. अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.५३
१२४. दूसरी ओर से (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.९५
१२५. मेरे लिए नहीं (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.१३९
१२६. खेल (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.२

१२७. ढलान पर (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.३८
१२८. यात्रा-मुक्त - राजी सेठ, पृष्ठ.५९
१२९. उसी जंगल में (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.६३
१३०. उसी जंगल में (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.६३
१३१. स्त्री (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.५१
१३२. अभी तो (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.६६
१३३. पुल (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.१८
१३४. इन दिनों (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.९२
१३५. यह कहानी नहीं - राजी सेठ, पृष्ठ.१०६
१३६. दलदल (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ पृष्ठ.६७
१३७. उतना-सा देश (ग़मे-हयात ने मारा) -राजी सेठ पृष्ठ.७७
१३८. तत-सम - राजी सेठ, पृष्ठ.९१
१३९. तत-सम - राजी सेठ, पृष्ठ.१२२
१४०. आधुनिकता और सृजनात्मक इतिहास - डॉ.इन्द्रनाथ मदान, पृष्ठ.१४
१४१. प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्य में अस्तित्ववाद - डॉ.शुकदेव सिंह, पृष्ठ.९०
१४२. समांतर चलते हुए (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.१८
१४३. उसका आकाश (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.४१
१४४. पुन: वही (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.७४
१४५. अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.१४५
१४६. एक बड़ी घटना (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.१४६
१४७. मेरे लिए नहीं (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.१२८
१४८. उन दोनों के बीच (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.१००
१४९. मैं तो जन्मा ही (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.६२

१५०. तत-सम - राजी सेठ, पृष्ठ.३९
१५१. एकला चलो रे - युवाचार्य महाप्रज्ञ, पृष्ठ.२७२
१५२. शिक्षा के मनोवैज्ञानिकीय आधार-श्रीमती.आर.के.शर्मा,श्रीकृष्ण दुबे, पृष्ठ.२४४
१५३. अस्तित्व से बड़ा (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.५३
१५४. अस्तित्व से बड़ा (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.५३
१५५. अकारण तो नहीं (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.७३
१५६. उसी जंगल में (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.६६
१५७. अनावृत कौन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.२२
१५८. अपने दायरे (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.५५
१५९. तीसरी हथेली - राजी सेठ, पृष्ठ.६५
१६०. दूसरी ओर से (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.९६
१६१. नगर रसायन (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.१०६
१६२. सदियों से (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.१६
१६३. इतना-सा देश (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृष्ठ.७७
१६४. भारतीय मध्यवर्ग और सामाजिक उपन्यास-डॉ. पी.एस,थॉमस, पृष्ठ.३७
१६५. आमने सामने (यात्रा-मुक्त) - राजी सेठ, पृष्ठ.२०
१६६. यात्रा-मुक्त - राजी सेठ, पृष्ठ.४५
१६७. घोड़ो से गधे (दूसरे देशकाल में) - राजी सेठ, पृष्ठ.५८
१६८. एक दुनिया समानांतर - राजेंद्र यादव, पृष्ठ.२७
१६९. नयी कहानी की भूमिका - कमलेश्वर, पृष्ठ.१०
१७०. किसका इतिहास (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.१९
१७१. मुलाकात (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृष्ठ.११
१७२. मुलाकात (ग़मे-हयात ने मारा) - राजी सेठ, पृष्ठ.११

१७३. ठहरो,इंतजार हुसैन(ग़मे-हयात ने मारा)- राजी सेठ, पृष्ठ.११९
१७४. आधुनिक भारतीय सामाजिक समस्या- डॉ.आगलावे, पृष्ठ.१७३
१७५. उसका आकाश (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.३५
१७६. उसका आकाश (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.३६
१७७. उसका आकाश (अन्धे मोड़ से आगे) - राजी सेठ, पृष्ठ.३७
१७८. एक बड़ी घटना (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.१२०
१७९. एक बड़ी घटना (तीसरी हथेली) - राजी सेठ, पृष्ठ.१२५
१८०. इन दिनों (यह कहानी नहीं) - राजी सेठ, पृष्ठ.८९